Year 9, Issue Feb 2023

DEFENDER
डिफेन्डर

पहल भारत निर्माण की

Feb 2023
Rs. 30/-

वसंत पर बादल

संपादकीय

फ़रवरी को आमतौर पर पश्चिमी देशों में प्यार का महीना कहा जाता है। भारत में भी वेलेंटाइन डे का अच्छा ख़ासा प्रभाव रहता है।

लेकिन साल 2019 में जब विश्व वेलेंटाइन डे मना रहा था तभी पाकिस्तान से आए आतंकवादियों के द्वारा जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में एक कायराना कृत्य किया गया। 14 फ़रवरी 2019 के अहले सुबह RDX से लदा हुआ एक कार CRPF के काफिले से जा टकराई। इस सोची-समझी टक्कर से हुए विस्फोट में 44 सेना के जवान शहीद हो गए थे। यह कोई पहली बार पाकिस्तान के द्वारा किया गया कायराना हमला नहीं था। इससे पहले उरी में भी ऐसा ही कायरतापूर्ण हरकत पाकिस्तान के शह पर पल रहे दहशतगर्दों के द्वारा अंजाम दिया गया था। हलांकि, उस घटना के बाद भारतीय सेना ने पाकिस्तान में घुस कर सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम जरूर दिया था। लेकिन वो कहते हैं न "चाहे कुछ भी कर लो, कुत्ते का दुम कभी सीधी नहीं होती है", ठीक उसी प्रकार का परिचय पुलवामा हमले को अंजाम देकर पाकिस्तान के द्वारा दिया गया।

"ब्लेड डे" यानी कि काला दिवस, यह तब तक कोई नहीं मनाता है, जब तक कुछ बुरा नहीं घटित हुआ हो। भारतीयों के लिए अब 14 फ़रवरी आजीवन काला दिवस के रुप याद किया जाएगा। उस सुबह जब देश के लोगों कि आँखें खुली तो वो आँखें अपने बहादुर जवानों के शहादत पर भिंगा हुआ था। 13 फ़रवरी के रात सोते वक़्त किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि प्रेम के प्रतीक के रूप में मनाए जाने वाले दिन ऐसी दिल दहलाने वाली घटना हो जाएगी। इस घटना के बाद लोगों में ग़ुस्सा भी देखने को मिला था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी एक मंच से कहा था, "हर आँसू का बदला लिया जाएगा।" और हुआ भी कुछ ऐसा ही। आंतकी हमले के ठीक 12 दिन बाद भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान के बालाकोट इलाक़े में घुसकर एयर स्ट्राइक किया था। वायु सेना के इस हमले में पाकिस्तान को अच्छा खासा नुक़सान उठाना पड़ा था। इस कारवाई की जानकारी ख़ुद सेना ने देश को दी थी। जानकारी के अनुसार, पी.ओ.के. के बालाकोट इलाक़े में 26 फ़रवरी 2019 के सुबह तीन बजे भारतीय वायु सेना के मिराज विमानों ने बालाकोट में बने आतंकी अड्डे को तबाह कर दिया था। वायु सेना के इस कारवाई में लगभग 300 आतंकी के मरने की बात कही गयी। जब यह कारवाई भारत के द्वारा किया गया और इसकी जानकारी आम लोगों के पास पहुँची तो लोग जश्न मनाने लगे थे। लोग इस बात से खुश थे कि जिस आतंकियों ने हमारे सेना के जवानों को छल से मारा था, उन्हें आज वायु सेना ने घर में घुस कर मारा था। "बदला पूरा हुआ, देश शहीदों को याद करके उन्हें श्रद्धांजलि दे रहा था।"

"डिफ़ेंडर" के इस अंश में पुलवामा हमले के पाँच वर्ष पूरा होने पर शहीदों को श्रद्धांजलि दिया गया है। उन्हें याद किया गया है, जो देश के लिए शहीद हो गए थे। इसके अलावा मराठा सम्राट छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके हिन्दु राज्य के स्थापना के संबंध में भी चर्चा कि गयी है। प्यार के समर्पित इस माह को मूल रुप से वेलेंटाइन डे के रुप में मनाया जाता है। लेकिन क्या आपको पता है कि आख़िर क्यों वेलेंटाइन डे मनाया जाता है? वेलेंटाइन डे के संबंध में और अधिक रोचक बातें इस अंश में आपको पढ़ने को मिलेगी। इसी अलावा भगवान नीलकंठ का शक्ति से मिलन का भी अद्भुत प्रसंग और कुबेर के रहस्य पढ़ने को मिलेगा।

महर्षि दयानंद सरस्वती का जीवन विश्व के लिए एक प्रेरणा है। इस अंश में आपको दयानंद सरस्वती के जीवन, मृत्यु और कार्य को पढ़ने का सुअवसर मिलेगा। वहीं, संत रविदास के भक्ति को भी जानने का मौक़ा मिलेगा। संत रविदास की अमर पंक्तियों को अकसर आपने पढ़ा होगा। उनके द्वारा कहा गया था, "जाति-जाति में जाति हैं, जो केतन के पात, रैदास मनुष ना जुड़ सके जब तक जाति न जात।" यह अंश मूल रुप से जहाँ एक तरफ सेना के शौर्य को याद किया जा रहा है तो वहीं प्रेम के प्रतीक वेलेंटाइन डे के संबंध में भी हम विस्तृत चर्चा करेंगे। इसके अलावा अध्यात्म से जुड़े विभिन्न विषयों पर भी चर्चा किया है।

——— सुभम राजा

Dr.AXICO
Way To Wellness
आपका अपना
आयुर्वेदिक क्लिनिक

DEFENDER
मासिक पत्रिका
RNI No.-DELMUL/2014/58060. Year 9,Issue December 2022
Postal Regd. No. DL(W)10/2227/2016-18

हाँ, लेखनी! हृत्पत्र पर लिखनी तुझे है यह कथा,
दृक्कालिमा में डूबकर तैयार होकर सर्वथा।
स्वच्छन्दता से कर तुझे करने पड़ें प्रस्ताव जो,
जग जायें तेरी नोंक से सोये हुए हों भाव जो।

-मैथिलीशरण गुप्त

जन मीडिया पब्लि, प्रा. लि. द्वारा प्रकाशित सभी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हमारा एक ही उद्देश्य है कि लेखनी से देश जागत हो और इसका गौरवशाली निर्माण के साथ भारत पुन: विश्व गुरू बने। लेखन के दौरान कभी कोई कटु शब्द भी कागज पर उधृत हो जाता है, इसका आशय किसी को आहत करना नहीं बल्कि उसको जगाना है। हमारा प्रयास रहता है कि हम पत्रकारिता की गरिमा को बनाए रखते हुए समाज के निर्माण में सदैव एक स्वस्थ योगदान देते रहें।

धनंजय कुमार सिंह
प्रधान संपादक

प्रधान संपादक
धनंजय कुमार सिंह
संपादक
प्रेरणा अग्रवाल
साहित्य संपादक
संतोष कुमार
प्रबंध संपादक
डा. अजय सिन्हा
विधि संपादक
सुश्री चंचल
लेखिका
प्रियंका सिंह
ग्राफ़िक डिजाइनर
नितेश कुमार राठौर
वितरण- रोहित जोशी

ब्यूरो चीफ
दिल्ली
अनुज तिवारी
हरियाणा
रविश कुमार
राजस्थान
शैलेन्द्र चौहान
उत्तर प्रदेश
अमित त्यागी, संदीप चंद्र, अशोक कु. सिंह
बिहार
संजय कुमार सिंह
रत्नाकर मिश्रा, बिजेंद्र सिंह
झारखण्ड
राजेश पांडेय
उत्तराखंड
मनोज सिंह
गुजरात
शैलेश भाई पटेल, रामचंद्र केशवला
महाराष्ट्र
नवल किशोर
कोलकाता
रंजित बोस
जम्मू एवं कश्मीर
नरेश शर्मा, अमरनाथ शर्मा
केरल
के. एम. मणी
हिमाचल प्रदेश
रमन सनोरिया, विजय कुमार राणा

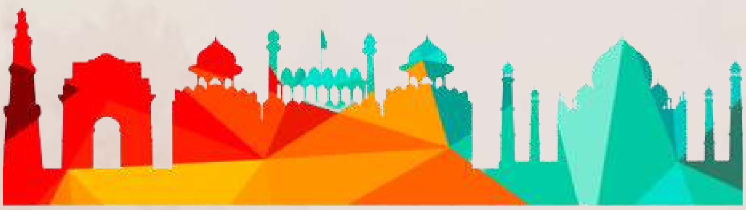

सभी कानूनी विवादों का क्षेत्राधिकार दिल्ली न्यायालय के अधीन होगा किसी भी लेख एवं सामग्री लेखकों के स्वयं के है। इससे प्रकाशक व संपादक की सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मुख्य कार्यालय : 29/2, विजय एन्क्लेव, डाबरी पालम रोड़, नई दिल्ली-110045
TEL: +91 9971999976 E-MAIL : janmedia.in@gmail.com WEBSITE : janmedia.in
FACEBOOK : www.facebook.com / Nation Live TWITTER : @nationlive
YOUTUBE : www.youtube.com / Nation Live IPTV INSTAGRAM : @nation_live_

Jan Media Publication Pvt. Ltd.
JAN MEDIA NATION Live खबरों की खबर JhelamExpress NATIONAL NEWSPAPER

स्वामित्वधिकारी- Janmedia Publication Pvt. Ltd. प्रकाशन व मुद्रक धनंजय कुमार सिंह द्वारा एशियन प्रिन्टवेल हाउस न. 240 नवादा नई दिल्ली से मुद्रित तथा WZ-30 वशिष्ठ पार्क सागरपुर से प्रकाशित।

INDEX

- नीलकंठ संग शक्ति का मिलन 6-7
- मराठा सम्राट 10-11
- प्रेम के प्रतिक की दास्ता 12-13
- Delhi Expo 15
- अमर जवानों के बलिदान 16-17
- मूलशंकर से महर्षि दयानन्द 18-19
- रैदास तेरी भगति दूरी 20-21
- 74वां ऐतिहासिक गणतंत्र 22-23
- 40 हज़ार परिवार हुए घर से बेघर ....? 26-27
- डिजिटल मार्केटिंग 28-29
- क्रिप्टो का काला सच 30-31
- सवालों के घेरे में पठान 32-33
- कौन है धीरेन्द्र धीरू ! 34
- Delhi Events 35

Key Highlights

आदि शक्ति

06 नीलकंठ संग शक्ति का मिलन

07 कुबेर का रहस्य

पुलवामा

16 अमर जवानों के बलिदान

17 ऐतिहासिक STRIKE

ARTICLES

22-23 74वां ऐतिहासिक गणतंत्र

26-27 40 हज़ार परिवार हुए घर से बेघर ....?

28-29 डिजिटल मार्केटिंग

30-31 क्रिप्टो का काला सच

32-33 सवालों के घेरे में पठान

34 कौन है धीरेन्द्र धीरू !

छत्रपति शिवजी

10 मराठा सम्राट...

11 हिन्दू राज्य की स्थापना

महर्षि दयानन्द

18 मूलशंकर से महर्षि दयानन्द

19 महर्षि के मृत्यु का सच

वैलेंटाइन

12 प्रेम के प्रतिक की दास्ता

13 वैलेंटाइन का आखिरी पत्र

रविदास

20 रैदास तेरी भगति दूरी

21 महर्षि के मृत्यु का सच

नीलकंठ संग शक्ति का मिलन

शिवरात्रि तो हर महीने में आती है लेकिन महाशिवरात्रि सालभर में एक बार आती है। फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। इस बार साल 2023 में यह पर्व 18 फरवरी को है। महाशिवरात्रि का महत्व इसलिए है क्योंकि यह शिव और शक्ति की मिलन की रात है। आध्यात्मिक रूप से इसे प्रकृति और पुरुष के मिलन की रात के रूप में बताया जाता है। शिवभक्त इस दिन व्रत रखकर अपने आराध्य का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। मंदिरों में जलाभिषेक का कार्यक्रम दिन भर चलता है। लेकिन क्या आपको पता है कि महाशिवरात्रि क्यों मनाई जाती है, इसके पीछे का रहस्य क्या है?

पौराणिक कथाओं के अनुसार, महाशिवरात्रि के दिन शिवजी पहली बार प्रकट हुए थे। शिव का प्राकट्य ज्योतिर्लिंग यानी अग्नि के शिवलिंग के रूप में था। ऐसा शिवलिंग जिसका ना तो आदि था और न अंत। बताया जाता है कि शिवलिंग का पता लगाने के लिए ब्रह्माजी हंस के रूप में शिवलिंग के सबसे ऊपरी भाग को देखने की कोशिश कर रहे थे लेकिन वह सफल नहीं हो पाए। वह शिवलिंग के सबसे ऊपरी भाग तक पहुंच ही नहीं पाए। दूसरी ओर भगवान विष्णु भी वराह का रूप लेकर शिवलिंग के आधार ढूंढ रहे थे लेकिन उन्हें भी आधार नहीं मिला।कुछ हिन्दू मान्यताओं के अनुसार इसी दिन से ही सृष्टि का निर्माण हुआ था। ऐसी मान्यता है की इसी दिन भगवान शिव करोड़ो सूर्यो के समान तेजस्व वाले लिंगरूप में प्रकट हुए थे।

इसके अलावा एक और कथा यह भी है कि महाशिवरात्रि के दिन ही शिवलिंग विभिन्न 64 जगहों पर प्रकट हुए थे। उनमें से हमें केवल 12 जगह का नाम पता है। इन्हें हम 12 ज्योतिर्लिंग के नाम से जानते हैं। महाशिवरात्रि को शिव की शादी के रूप में भी मनाया जाता है। कहा जाता है की इस दिन ही शिव ने अपना वैराग्य छोड़कर शक्ति से शादी की थी और अपना सांसारिक जीवन शुरू किया था। वहीं इस दिन उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में लोग दीपस्तंभ लगाते हैं। दीपस्तंभ इसलिए लगाते हैं ताकि लोग शिवजी के अग्नि वाले अनंत लिंग का अनुभव कर सकें। यह जो मूर्ति है उसका नाम लिंगोभव, यानी जो लिंग से प्रकट हुए थे। ऐसा लिंग जिसका न तो आदि था और न ही अंत। माना जाता है कि शिवरात्रि के 15 दिन बाद जब होली का त्योहार मनाया जाता है उसके पीछे का भी एक कारण यह है की आदियोगी ने वैराग्य छोड़ शक्ति का हाथ थाम लिया था।

विभिन्न स्थानों पर महाशिवरात्रि को लेकर विभिन्न मान्यताएं प्रचलित है और इस वजह से महाशिवरात्रि को कई तरह से मनाया जाता हैं। शिवभक्त इस दिन पवित्र नदियों जैसे की गंगा व यमुना में सूर्योदय के समय स्नान करते हैं। स्नान के बाद साफ व पवित्र वस्त्र पहने जाते हैं। इसके बाद घरों व मंदिरों में विभिन्न मंत्र व जापों के द्वारा भगवान शिव की पूजा की जाती है। शिवलिंग को दूध व जल से स्नान कराया जाता हैं। हर शिवरात्रि की सम्पूर्ण पूजाविधि की बात करे तो सबसे पहले शिवलिंग को पवित्र जल या दूध से स्नान कराया जाता हैं। स्नान के बाद शिवलिंग पर सिंदूर लगाया जाता है। इसके बाद शिवलिंग पर फ्ल चढ़ाए जाते हैं। इसके बाद अन्न व धूप को अर्पित किया जाता हैं। कुछ लोग शिवलिंग पर धन भी चढाते हैं।

इसके बाद आध्यात्मिक दृष्टि से शिवलिंग के आगे ज्ञान के प्रतीक के रूप में एक दीपक जलाया जाता हैं। इसके बाद शिवलिंग पर पान के पत्ते भेंट लिए जाते हैं जिनके बारे में कई विशेष मान्यतायें हैं। महाशिवरात्रि को जाग्रति की रात माना जाता हैं। महाशिवरात्रि को रात में शिव की महान पूजा व आरती की जाती हैं। इस दिन रात को शिव व पार्वती की काल्पनिक रूप से शादी की जाती हैं और बारात निकाली जाती हैं। कुछ सम्प्रदायों में इस रात नाचने, गाने व

कुबेर का रहस्य

की महान पूजा व आरती की जाती है। इस दिन रात को शिव व पार्वती की काल्पनिक रूप से शादी की जाती हैं और बारात निकाली जाती हैं। कुछ सम्प्रदायों में इस रात नाचने, गाने व खुशिया मनाने की मान्यता है अतः वह मेलों व जागरण का आयोजन करते हैं।

ओम हौं जूं सः ओम भूर्भुवः स्वः ओम त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ओम स्वः भुवः ओम सः जूं हौं ओम॥

लेकिन इसके अलावा क्या आपको पता है कि विषधारी हमारे भोले भंडारी को सिर्फ एक दीप जला कर भी प्रसन्न किया जा सकता है। मध्य रात्रि के समय दीप जला कर आप अपने शिव आराध्य को प्रसन्न कर सकते है। इसके पीछे पीछे भी एक पुरानी कथा है।

शास्त्रों के अनुसार, कुबेर देव अपने पूर्व जीवन में एक चोर थे। वे मंदिरों में जाके धन की चोरी करते थे। एक रात की बात है, वह चोरी करने के लिए भगवान शिव के बड़े से मंदिर में पहुंचे। अधिक रात्रि होने के कारण वहां पर बहुत अंधेरा था। वे अंधेरे में कुछ भी नहीं देख पा रहे थे, फिर उन्होंने चोरी करने के लिए मंदिर में रखा एक दीपक जलाया। दीपक की रोशनी में, वह मंदिर के धन को स्पष्ट रूप से देखने लगे।
कुबेर देव मंदिर की वस्तुओं और आभूषणो को चुरा रहे थे कि तेज हवा से दीपक बुझ गया। उन्होंने फिर से दीपक जलाया, थोड़ी देर बाद फिर से हवा चली और दीपक बुझ गया। कुबेर ने फिर एक दीपक लिया और जलाया। यह प्रक्रिया कई बार हुई। रात में शिव के सामने दीपक जलाकर महादेव की अपार कृपा प्राप्त होती है। कुबेर को यह पता नहीं था, लेकिन भोलेनाथ रात में बार-बार दीपक जलता देख कुबेर से अधिक प्रसन्न हो गए। और उन्होंने कुबेर को वरदान दे दिया की वह अपने अलगे जन्म में जन्मजात ख़जाने के देव होंगे और अपनी कुबेर अपनी कृपा से लोगों को भी धनवान कर पाएंगे।

लेख श्रोत - महर्षि याज्ञवल्क्य के लिखे ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण से

"जहां इंतजार ना हो वहां ये प्रेम वयर्थ है,
सती प्रेम है तो शिव प्रेम का अर्थ है।"

DEFENDER मासिक पत्रिका

-महाशिवरात्रि 18 फरवरी

Education Mitra
शिक्षा का सारथी

Become...

CONSULTANT FOR

HIGHER EDUCATION

IS ONLINE & DISTANCE LEARNING IS RIGHT FOR YOU ?

COMPARISON BETWEEN

TOP UNIVERSITIES

- Lovely Professional University
- Swami Vivekanand Subharti University
- Suresh Gyan Vihar University
- IEC College Of Engineering & Technology

POPULAR COURSES

- B.B.A.
- B.Com
- M.B.A.
- M.Com
- B.C.A.
- B.A.
- M.C.A.
- M.A.

ONLINE & DISTANCE LEARNING

Why Us?

- Hassle Free Process
- A Team Of Skilled Counsellors
- Providing Right Information Right Time
- Inspiring Youth To Make a Best Choice
- Cost Free Unpaid Session

Contact Us :

Contact : +91 962-599-3408

Mail : support@educationmitra.in

Web : educationmitra.in

Pulwama Attack

Event

Pulwama attack 14 February 2019

Tue, 14 Feb, 10 Am

Nangli Sakrawati, New Delhi, Delhi

Other Events
(in Delhi)

DEFENDER मासिक पत्रिका

Nani Palkhivala Quiz on Constitutional Law
Sun, 5 Feb, 9:00 Am–5:30 Pm
Le Meridien New DelhiLe Meridien,
Windsor Pl, Connaught Place, New Delhi

PLASTINDIA 2023
Wed, 1 Feb -5 Feb, Sunday
Pragati Maidan New Delhi

IIGF FAIR 2023
Tue, 7 Feb-Thu, 9 Feb 9 Am–6 Pm
INDIA EXPO CENTRE & MART
Plot No. 23/25, 27/29, Knowledge Park II,
Greater Noida, Uttar Pradesh

FOOTWEAR INDIA EXPO - New Delhi 2023
Fri, 10 Feb - 12 Feb Sun
Pragati Maidan, New Delhi

CAST INDIA EXPO
Wed, 8 Feb–Thu, 9 Feb,10 Am- 6 Pm
INDIA EXPO CENTRE & MART
Plot No. 23/25, 27/29, Knowledge Park II,
Greater Noida, Uttar Pradesh

मराठा सम्राट .....

अब जहां देश की बात आई है और देश भक्तों की बात हुई है तो वहां हमारे वीर जवानों के साथ-साथ हमारे वीर योद्धा राजाओं को भी याद किया जाना मुनासिफ है। जिसमें अनेकों नाम है जैसे महाराणा प्रताप, वीर सम्राट अशोक, छत्रपति शिवाजी। अब शिवाजी का नाम आया है तो आपको शायद पता होगा की छत्रपति शिवाजी महाराज को मराठा का स्थापक माना जाता है। और उन्हें महाराष्ट्र के लोग आज भी एक आदर्श और भगवान के रूप में पूजते है। क्या आपको पता है की उनका इतिहास क्या था? तो आइये जानते है की आखिर क्या थी उनकी कहानी......

शिवाजी का जन्म पुणे जिले के जुन्नार गाँव के शिवनेरी किले में हुआ था। शिवाजी का नाम उनकी माता ने भगवान शिवा के ऊपर रखा था, जिन्हें वो बहुत मानती थी। शिवाजी के पिता बीजापुर के जनरल थे, जो उस समय डेक्कन के सुल्तान के हाथों में था। शिवाजी अपनी माँ के बेहद करीब थे, उनकी माता बहुत धार्मिक प्रवृति की थी, यही प्रभाव शिवाजी पर भी पड़ा था। उन्होंने रामायण व महाभारत को बहुत ध्यान से पढ़ा था और उससे बहुत सारी बाते सीखी व अपने जीवन में उतारी थी। शिवाजी को हिंदुत्व का बहुत ज्ञान था, उन्होंने पुरे जीवन में हिन्दू धर्म को दिल से माना और हिन्दुओं के लिए बहुत से कार्य किये। शिवाजी के पिता ने दूसरी शादी कर ली और कर्नाटक चले गए, बेटे शिवा और पत्नी जिजाबाई को किले की देख रेख करने वाले दादोजी कोंडदेव के पास छोड़ गए थे।

शिवाजी को हिन्दू धर्म की शिक्षा कोंडदेव से भी मिली थी, साथ ही उनके कोंडाजी ने उन्हें सेना के बारे में, घुड़सवारी और राजनीती के बारे में भी बहुत सी बातें सिखाई थी। शिवाजी बचपन से ही बुद्धिमानी व तेज दिमाग के थे, उन्होंने बहुत अधिक शिक्षा तो ग्रहण नहीं की, लेकिन जितना भी उन्हें बताया सिखाया जाता था, वो वे बहुत मन लगाकर सीखते थे। 12 साल की उम्र में शिवाजी बंगलौर गए, जहां उन्होंने अपने भाई संभाजी और माँ के साथ शिक्षा ग्रहण की। यहीं उन्होंने 12 साल की उम्र में साईंबाई से विवाह किया।

शिवाजी का जब जन्म हुआ था, उस समय तक मुगलों का साम्राज्य भारत में फ़ैल चूका था, बाबर ने भारत में आकर मुग़ल साम्राज्य खड़ा कर दिया था। शिवाजी ने मुगलों के खिलाफ जंग छेड़ दी और कुछ ही समय में समस्त महाराष्ट्र में मराठा साम्राज्य पुनः खड़ा कर दिया। शिवाजी ने मराठियों के लिए बहुत से कार्य किये और यही वजह है, कि उन्हें समस्त महाराष्ट्र में आज भी भगवान की तरह पूजा जाता है।

15 साल की उम्र में शिवाजी ने पहला युद्ध लड़ा, उन्होंने तोरना किले में हमला कर उसे जीत लिया। इसके बाद उन्होंने कोंडाना और राजगढ़ किले में भी जीत का झंडा फहराया। शिवाजी के बढ़ते ताकत को देख बीजापुर के सुल्तान ने शाहजी को कैद कर लिया, शिवाजी व उनके भाई संभाजी ने कोंडाना के किले को वापस कर दिया, जिसके बाद उनके पिताजी को छोड़ दिया गया। अपनी रिहाई के बाद शाहजी अस्वस्थ रहने लगे और 1964-65 के आस पास उनकी मौत हो गई। इसके बाद शिवाजी ने पुरंदर और जवेली की हवेली में भी मराठा का ध्वज लहराया। बीजापुर के सुल्तान ने 1659 में शिवाजी के खिलाफ अफजल खान की एक बहुत बड़ी सेना भेज दी और हिदायत दी की शिवाजी को जिंदा या मुर्दा लेकर आये। अफजल खान ने शिवाजी को मारने की कोशिश कूटनीति से की, लेकिन शिवाजी ने अपनी चतुराई से अफजल खान को ही मार गिराया। शिवाजी की सेना ने बीजापुर के सुल्तान को प्रतापगढ़ में हराया था। यहां शिवाजी की सेना को बहुत से शस्त्र, हथियार मिले जिससे मराठा की सेना और ज्यादा ताकतवर हो गई।

हिन्दू राज्य की स्थापना

बीजापुर के सुल्तान ने एक बार फिर बड़ी सेना भेजी, जिसे इस बार रुस्तम जमान ने नेतृत्व किया, लेकिन इस बार भी शिवाजी की सेना ने उन्हें कोल्हापुर में हरा दिया।

शिवाजी जैसे जैसे आगे बढ़ते गए उनके दुश्मन भी बढ़ते गए, शिवाजी के सबसे बड़े दुश्मन थे मुगल। 1657 में शिवाजी ने मुगलों के खिलाफ लड़ाई शुरू कर दी। उस समय मुगल साम्राज्य औरंगजेब के हक में था, औरंगजेब ने शाइस्ता खान की सेना को शिवाजी के खिलाफ खड़ा कर दिया। उन्होंने पुना में अधिकार जमा लिया और सेना का विस्तार वहीं किया। एक रात शिवाजी ने अचानक पुना में हमला कर दिया, हजारों मुगल सेना के लोग मारे गए, लेकिन शाइस्ता खान भाग निकला। पुना पर विजय हासिल करने के बाद 1664 में शिवाजी ने सूरत में भी अपना झंडा फहराया।

औरंगजेब ने हार नहीं मानी और इस बार उसने अम्बर के राजा जय सिंह और दिलीर सिंह को शिवाजी के खिलाफ खड़ा किया। जय सिंह ने उन सभी किलों को जीत लेता है, जिनको शिवाजी ने जीते थे और पुरन्दरपुर में शिवाजी को हरा दिया। इस हार के बाद शिवाजी को मुगलों के साथ समझोता करना पड़ा। शिवाजी ने 23 किलों के बदले मुगलों का साथ दिया और बीजापुर के खिलाफ मुगल के साथ खड़ा रहा।

औरंगजेब ने समझोते के बावजूद शिवाजी से अच्छा व्यव्हार नहीं किया, उसने शिवाजी और उसके बेटे को जेल में बंद कर दिया, लेकिन शिवाजी अपने बेटे के साथ आगरा के किले से भाग निकले। अपने घर पहुंचने के बाद शिवाजी ने नयी ताकत के साथ मुगलों के खिलाफ जंग छेड़ दी। इसके बाद औरंगजेब ने शिवाजी को राजा मान लिया। 1674 में शिवाजी महाराष्ट्र के एक अकेले शासक बन गए। उन्होंने हिन्दू रिवाजों के अनुसार शासन किया।

महाराष्ट्र में हिन्दू राज्य की स्थापना शिवाजी ने 1674 में की, जिसके बाद उन्होंने अपना राज्याभिषेक कराया। शिवाजी कुर्मी जाति के थे, जिन्हें उस समय शुद्र ही माना जाता था, इस वजह से सभी ब्राह्मण ने उनका विरोध किया और राज्याभिषेक करने से मना कर दिया। शिवाजी ने बनारस के भी ब्राह्मणों को न्योता भेजा, लेकिन वे भी नहीं माने, तब शिवाजी ने उन्हें घूस देकर मनाया और फिर उनका राज्याभिषेक हो पाया। यहीं पर उन्हें छत्रपति की उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके 12 दिन के बाद उनकी माता जिजाभाई का देहांत हो गया, जिससे शिवाजी ने शोक मनाया और कुछ समय बाद फिर से अपना राज्याभिषेक कराया। इसमें दूर दूर से राजा पंडितों को बुलाया गया। जिसमें बहुत खर्चा हुआ। शिवाजी ने इसके बाद अपने नाम का सिक्का भी चलाया।

शिवाजी धार्मिक विचारधाराओं मान्यताओं के धनी थे। अपने धर्म की उपासना वो जिस तरह से करते थे, उसी तरह से वो सभी धर्मों का आदर भी करते थे, जिसका उदहारण उनके मन में समर्थ रामदास के लिए जो भावना थी, उससे उजागर होता है। उन्होंने रामदास जी को पराली का किला दे दिया था, जिसे बाद में सज्जनगड के नाम से जाना गया। स्वामी राम दास एवं शिवाजी महाराज के संबंधो का बखान कई कविताओं के शब्दों में मिलता है। धर्म की रक्षा की विचारधारा से शिवाजी ने धर्म परिवर्तन का कड़ा विरोध किया।

शिवाजी ने अपना राष्ट्रीय ध्वज नारंगी रखा था, जो हिंदुत्व का प्रतीक है। इसके पीछे एक कथा है, शिवाजी रामदास जी से बहुत प्रेम करते थे, जिनसे शिवाजी ने बहुत सी शिक्षा ग्रहण की थी। एक बार उनके ही साम्राज्य में रामदास जी भीख मांग रहे थे, तभी उन्हें शिवाजी ने देखा और वे इससे बहुत दुखी हुए, वे उन्हें अपने महल में ले गए और उनके चरणों में गिर उनसे आग्रह करने लगे, कि वे भीख ना मांगे, बल्कि ये सारा साम्राज्य ले लें। स्वामी रामदास जी शिवाजी की भक्ति देख बहुत खुश हुए, लेकिन वे सांसारिक जीवन से दूर रहना चाहते थे, जिससे उन्होंने साम्राज्य का हिस्सा बनने से तो इंकार कर दिया, लेकिन शिवाजी को कहा, कि वे अच्छे से अपने साम्राज्य को संचालित करें और उन्हें अपने वस्त्र का एक टुकड़ा फाड़ कर दिया और बोला इसे अपना राष्ट्रीय ध्वज बनाओ, ये सदेव मेरी याद तुम्हे दिलाएगा और मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा।

शिवाजी के पास एक बहुत बड़ी विशाल सेना थी, शिवाजी अपनी सेना का ध्यान एक पिता की तरह रखते थे। शिवाजी सक्षम लोगों को ही अपनी सेना में भर्ती करते थे, उनके पास इतनी समझ थी, कि वे विशाल सेना को अच्छे से चला पायें। उन्होंने पूरी सेना को बहुत अच्छे से शारीरिक प्रशिक्षण दी थी, शिवाजी के एक इशारे पर वे सब समझ जाते थे। उस समय तरह तरह के कर लिए जाते थे, लेकिन शिवाजी बहुत दयालु राजा थे, वे जबरजस्ती किसी से कर नहीं लेते थे। उन्होंने बच्चों, ब्राह्मणों व औरतों के लिए बहुत कार्य किये। बहुत सी प्रथाओं को बंद किया। उस समय मुग़ल हिंदुओ पर बहुत अत्याचार करते थे, जबरजस्ती इस्लाम धर्म अपनाने को बोलते थे, ऐसे समय में शिवाजी मसीहा बनकर आये थे। शिवाजी ने एक मजबूत नौसेना की स्थापना की थी, जो समुद्र के अंदर भी तैनात होती और दुश्मनों से रक्षा करती थी, उस समय अंग्रेज, मुग़ल दोनों ही शिवाजी के किलों में बुरी नजर डाले बैठे थे, इसलिए उन्हें भारतीय नौसेना का पिता कहा जाता है।

शिवाजी बहुत कम उम्र में दुनिया से चल बसे थे, राज्य की चिंता को लेकर उनके मन में काफी असमंजस था, जिस कारण शिवाजी की तबियत ख़राब रहने लगी और लगातार 3 हफ़्तों तक वे तेज बुखार में रहे, जिसके बाद 3 अप्रैल 1680 में उनका देहांत हो गया। मात्र 50 साल की उम्र में उनकी मौत हो गई। उनके मरने के बाद भी उनके वफादारों ने उनके साम्राज्य को संभाले रखा और मुगलों अंग्रेजों से उनकी लड़ाई जारी रही।

शिवाजी एक महान हिन्दू रक्षक थे। शिवाजी ने एक कूटनीति बनाई थी, जिसके अन्तर्गत किसी भी साम्राज्य में अचानक बिना किसी पूर्व सुचना के आक्रमण किया जा सकता था, जिसके बाद वहां के शासक को अपनी गद्दी छोड़नी होती थी। इस नीति को गनिमी कावा कहा जाता था। इसके लिए शिवाजी को हमेशा याद किया जाता है। शिवाजी ने हिन्दू समाज को नया रूप दिया, अगर वे ना होते तो आज हमारा देश हिन्दू देश न होता मुगल पूरी तरह से हमारे ऊपर शासन करते। यही वजह है शिवाजी को मराठा में भगवान मानते है।

शिवाजी महाराज की याद में हर साल की तरह इस साल भी **शिवाजी महाराज की जयंती 19 फ़रवरी** को मनाई जाएगी।

"अगर मनुष्य के पास आत्मबल है तो वो समस्त संसार पर अपने हौसले से विजय पताका लहरा सकता है।"

-छत्रपति शिवाजी जयंती 19 फरवरी

प्रेम के प्रतिक की दास्ता

— St. Valentine

जहां जंग है वहां प्यार भी है, प्यार का मौसम भी है। बस इस प्यार को हमसफर के लिए मत समझो, क्योंकि ये प्यार तो सदाबहार का नाम है जो सबके लिए है। ये प्यार न सिर्फ बड़े के लिए न सिर्फ छोटो के लिए। न अपनों के लिए न सिर्फ गैरों के लिए। ये प्यार का मौसम तो है सबके लिए।

प्यार शब्द में पूरी दुनिया समाई हुई है, यह शब्द सृष्टि के समस्त धर्म ग्रंथों में दुनिया के समस्त साहित्य में, विश्व की सभी भाषाओं में देखने को मिलता है। इस प्यार को जाहिर करने के लिए एक माह भी बना दिया गया जिसमें एक दिन ऐसा भी है जिसे हम वेलेंटाइन डे कहते हैं। ये दिन हर साल **14 फरवरी** को मनाया जाता है, जिसे जोड़िया प्यार के त्योहार के रूप में मनाते हैं। प्रेम की कोई सीमा है ही नहीं। क्योंकि यह असीम है, अनंत है।

कबीर का एक बहुत ही सुंदर दोहा है- पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम, पढ़े सो पंडित होय।

सचमुच प्रेम शब्द में एक अनुपम मिठास है। इसमें असीम सौंदर्य है। इसलिए सभी लोग वैलेंटाइन डे को मनाते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं वैलेंटाइन डे को क्यों मनाया जाता है और प्रेम के इस पर्व की शुरुआत कैसे और कब हुई। आइए हम आपको बताते है की आखिर किसने इस दिन की शुरुवात की थी और क्या है इसके पीछे का रहस्य .....

आपको ये जान कर हैरानी होगी की ये दिन सिर्फ एक दिन नहीं था ये पहले किसी का नाम हुआ करता था। बताया जाता है कि करीब **270 ईसवी पूर्व रोमन साम्राज्य के दौरान वैलेंटाइन नाम का एक आदमी था। लेकिन इस प्यार के दिन की कहानी की शुरुआत प्यार से भरा हुआ नहीं था। ये कहानी एक दुष्ट राजा और कृपालु संत वैलेंटाइन के बिच हुए मुठभेड़ के बारे में है।**

इस दिन की शुरुआत होती है रोमन की तीसरी सदी से जहां एक अत्याचारी राजा हुआ करता था जिसका नाम क्लॉडियस था। रोमन के राजा का ये मानना था की एक अकेला सिपाही एक शादी शुदा सिपाही के मुकाबले जंग के लिए एक उचित और प्रभावशाली सिपाही बन सकता है क्यूंकि शादी शुदा सिपाही को हर वक्त बस इसी बात की चिंता लगी रहती है की उसके मर जाने के बाद उसके परिवार का क्या होगा और इसी चिंता से वो जंग में अपना पूरा ध्यान नहीं दे पाता है। यही सोच कर क्लॉडियस राजा ने ऐलान किया की उसके राज्य का कोई भी सिपाही शादी नहीं करेगा और जिस किसी ने भी उसके इस आदेश का उलंघन किया तो उसे कड़ी सजा दी जाएगी। राजा के इस फैसले से सभी सिपाही दुखी थे और उन्हें ये भी पता था की ये फैसला गलत है लेकिन राजा के डर से किसी ने भी इसका उलंघन करने की हिम्मत नहीं की और उनकी इस आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर हो गए।

लेकिन रोमन के संत वैलेंटाइन को ये नाइंसाफी बिलकुल मंजूर नहीं थी इसलिए उन्होंने राजा से छुपकर युवा सिपाहियों की मदद करनी शुरू कर दी और उनकी शादी करवाने लगे। जो भी सिपाही अपने प्रेमिका से शादी करना चाहते थे वो वैलेंटाइन के पास मदद मांगने जाते थे और वैलेंटाइन उनकी मदद भी करते थे और उनकी शादी करवा देते थे। इसी तरह वैलेंटाइन बहुत से सिपाहियों की गुप्त शादी करवा चुके थे। लेकिन सच ज्यादा दिन तक नहीं छुपता किसी ना किसी दिन वो सबके सामने बाहार निकल कर आ ही जाता है। उसी तरह वैलेंटाइन के इस कार्य के बारे में भी क्लॉडियस राजा के कान में खबर पहुँच गयी। वैलेंटाइन ने राजा के आदेश का पालन नहीं किया इसलिए राजा ने वैलेंटाइन को सजा-ए-मौत की सजा सुना दी और उन्हें जेल के अन्दर डाल दिया। जेल के अन्दर वैलेंटाइन अपनी मौत की तारीख का इंतज़ार कर रहे थे और एक दिन उनके पास जेलर आया जिसका नाम आस्ट्रियस आस्ट्रियस था। रोमन के लोगों का कहना था की वैलेंटाइन के पास एक दिव्य शक्ति थी जिसके इस्तेमाल से वो लोगों को रोगों से मुक्ति दिला सकते थे।

वैलेंटाइन का आखिरी पत्र

आस्ट्रियस की एक अंधी बेटी थी और उसे वैलेंटाइन के पास बसी जादुई ताकात के बारे में पता था इसलिए वो वैलेंटाइन के पास जाकर उनसे विन्नती करने लगा की उसकी बेटी की आँखों की रौशनी को अपने दिव्य शक्ति से ठीक कर दे। वैलेंटाइन एक नेक दिल के इंसान थे और वो सबकी मदद करते थे इसलिए उन्होंने जेलर की भी मदद की और उनकी अंधी बेटी की आँखों को भी अपनी शक्ति से ठीक कर दिया। उस दिन के बाद से वैलेंटाइन और आस्ट्रियस के बेटी के बिच गेहरी दोस्ती हो गयी थी और वो दोस्ती कब प्यार में बदल गयी उन्हें पता ही नहीं चला।

आस्ट्रियस की बेटी को वैलेंटाइन की मौत होने वाली है ये सोच सोच कर उसको गहरा सदमा लग गया था। और आखिर कार वो दिन 14 फ़रवरी आ गया था जिस दिन वैलेंटाइन को फाँसी लगने वाली थी। **अपनी मौत से पहले वैलेंटाइन ने जेलर से एक कलम और कागज़ माँगा और उस कागज़ में उसने जेलर की बेटी के लिए अलविदा सन्देश लिखा, पन्ने के आखिर में उसने "तुम्हारा वैलेंटाइन" लिखा था, ये वो लफ्ज़ हैं जिसे आज भी लोग याद करते हैं।** वैलेंटाइन के इस बलिदान के वजह से 14 फ़रवरी को उनके नाम से रखा गया और इस दिन को पूरी दुनिया में सभी प्यार करने वाले लोग वैलेंटाइन को याद करते हैं और एक दुसरे के साथ प्यार बाँटते हैं। इस दिन सभी प्यार करने वाले अपने प्रेमी प्रेमिका को फूल, तोहफे और मीठा दे कर अपने प्यार का इजहार करते हैं।

ये बहुत ही अहम सवाल है की क्या हम वैलेंटाइन केवल अपने प्रेमी के साथ ही मनाएं? इसका जवाब 'ना' है क्योंकि आजकल ये केवल प्रेमी तक ही सिमित नहीं रह गया है, आजकल तो इसे दोस्तों, परिवार वर्ग, भाई-बहन सभी के साथ मनाया जा रहा है। यह अपने प्यार को जाहिर करने का एक प्रतिक है। अब तो यह प्रेम, स्नेह, करुना और मोहब्बत का दिन बन गया है। इसलिए इसे आप किसी के साथ भी मना सकते हैं।

"आपका दिल स्वतंत्र है, इसका बात मानने का साहस अपने पास रखें।"

LEARN

MORE...

S. B. PRAKASHAN

About S.B. Prakashan

At S.B. Prakashan Pvt. Ltd., we are currently dealing with Textbooks and course books of grades 1st to 8th. We are associated with a larger group of M.S. Group of Companies, which is having its root in various other educational fields as well. Each year, we are growing as a company. We are making our name in one of the leading publication houses in the current market. Our books go through a careful examination and it is made sure that only standardised and quality content is published in our textbooks to provide students with the best of knowledge. We deal with various school boards and their syllabus for every subject. We have a prestigious batch of authors who work with top educational institutes. We cover not only North India but also deal with central and are looking forward to expanding further. We aim to provide the best quality material.

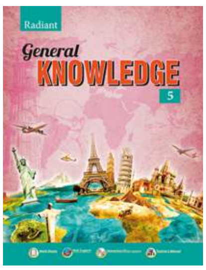

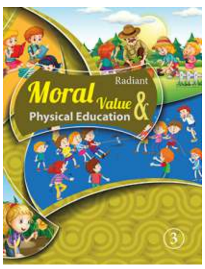

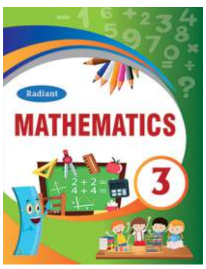

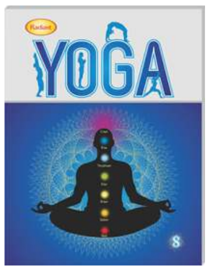

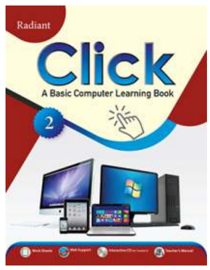

S. B. PRAKASHAN

Book for your better Learning...

Contact : +91 920-547-6295
Mail : info@sbprakashan.com

Delhi Expo

Water & Waste Expo

Thu, 16 Feb –18 Feb Sat,
Pragati Maidan, New Delhi

Other Events (in Delhi)

SATTE 2023
Thu, 9 Feb-Sat,11 Feb,10 Am–6 Pm
INDIA EXPO CENTRE & MART
Plot No. 23/25, 27/29, Knowledge Park II,
Greater Noida, Uttar Pradesh

DEFENDER
मासिक पत्रिका

MECTECH EXPO- 2023
Thu, 16 Feb– Sat, 18 Feb
Pragati Maidan
New Delhi, Delhi

India International Horti Expo
Wed, 8 Feb, Sat, 11 Feb, 8 Am–5 Pm
INDIA EXPO CENTRE & MART
Plot No. 23/25, 27/29, Knowledge Park II,
Greater Noida, Uttar Pradesh

IIGF Fair 2023
Tue, 7 Feb,Thu, 9 Feb, 9 Am–6 Pm
INDIA EXPO CENTRE & MART
Plot No. 23/25, 27/29, Knowledge Park II,
Greater Noida, Uttar Pradesh

PULW

ATT

मेरी नन्ही सी चिड़िया को चहकता छोड़ आया हूँ। मै अपनी माँ की बाहो को तरसता छोड़ आया हूँ। मुझे आज भी याद है वो दिन, जब हिंदुस्तान रोया था पुलवामा पर धोके से, दुश्मनो ने हमला कराया था।

14 फरवरी साल 2019, ये वही साल है जब कितनी जननीयों ने अपने वीर सपूतों को खो दिया था, कितनी सुहागनों ने अपना सुहाग खो दिया, कितने बच्चें यतीम हुए। इसी तारीख को चारों तरफ देश कोहराम में डूब गया था। इस साल 2023 में इस ₹ब्लैक डेर को चार साल पुरे हो रहे हैं, इसी आतंकी हमले में हमारे देश के सीमा पर तैनात रहने वाले सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हो गए थे। जम्मू-श्रीनगर नेशनल हाईवे पर हमलावर ने विस्फोटक भरी कार से सीआरपीएफ काफिले की बस को टक्कर मार दी थी। धमाका इतना भयंकर था कि बस के परखच्चे उड़ गए थे। ये आतंकी अभी यहां भी नही रुके। इसके बाद घात लगाए आतंकियों ने अंधाधुंध फायरिंग भी की। हमले के बाद इसकी जिम्मेदारी पाकिस्तानी आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने ली थी।

हालांकि उस 'ब्लैक डे' का बदला हमारे देश के पीएम नरेंद्र मोदी की अगुवाई में देश की सशस्त्र सेनाओं ने सीमापार से हुए इस हमले का मुहंतोड़ जवाब दिया लेकिन उन जवानों की शहादत की कसक आज भी बरकरार है। पुलवामा हमले में जवानों की शहादत के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने 15 फरवरी को कहा था कि- 'मेरे दिल में भी वैसी ही आग है, जैसी आपके दिल में है। सभी आंसुओं का बदला लिया जाएगा और सुरक्षा बलों को खुली छूट है। कार्रवाई का वक्त, जगह और तरीका वे खुद तय करेंगे। आतंकवादियों ने बड़ी गलती की है। उनके सरपरस्त बचेंगे नहीं।'
देश भर में इस कायराना हमले के खिलाफ प्रदर्शन हुए। लोगों ने एक ओर नम आंखों से शहीदों को श्रद्धांजलि दी तो वहीं दूसरी तरफ इसका मुंहतोड़ जवाब देने की पुरजोर मांग भी उठाई, देश में 'बदला' लेने की भावना चरम पर थी।

वहीं यूनाइटेड नेशंस और दुनियाभर के लगभग सभी देशों ने पुलवामा हमले की निंदा की और आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई को समर्थन देने का ऐलान किया। पाकिस्तान के सदाबहार दोस्त चीन ने भी पुलवामा हमले के खिलाफ यूनाइडेट नेशंस सिक्यॉरिटी काउंसिल के प्रस्ताव का समर्थन किया। इस हमले के बाद भारत ने जैश-ए-मोहम्मद के सरगना मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी घोषित कराने के लिए कूटनीतिक प्रयास शुरू किया, जो 1 मई को पूरा हुआ जब चीन ने अमेरिका, फ्रांस और यूके द्वारा लाए गए प्रस्ताव पर टेक्निकल होल्ड को वापस ले लिया।

हमले के लिए टॉप मिलिट्री और इंटेलिजेंस अधिकारियों की मीटिंग बुलाई गई। इस मीटिंग में युद्ध समेत अन्य विकल्पों पर भी चर्चा हुई। इसी दौरान एयरफोर्स की तरफ से एयर स्ट्राइक का ऑप्शन रखा गया। और ये बात सबको जंच गई।

18 फरवरी वो तारीख थी जब तय हुआ कि एक्शन कैसे होगा। रिसर्च एंड एनलिसिस विंग यानी RAW ने लोकेशन भी बता दी। जगह तय की गई पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत स्थित बालाकोट। यहां जैश-ए-मोहम्मद के टेरर कैंप्स होने की पुख्ता जानकारी थी। बालाकोट इसलिए भी चुना गया क्योंकि वहां सिविलियन आबादी नहीं थी। अभियान को गोपनीय रखने के लिए इसे 'ऑपरेशन बंदर'नाम दिया गया था।

मिशन खतरनाक था। किसी तेज तर्रार और काबिल ऑफिसर की जरूरत थी। ऐसे में 'ऑपरेशन बंदर' के लिए एयर मार्शल सी हरि कुमार को जिम्मा सौंपा गया। सी हरि कुमार के मुताबिक, पुलवामा हमले के दिन ही एयरफोर्स चीफ ने उनसे बात कर कहा था कि कोई प्लान होना चाहिए। मिशन की जानकारी सिर्फ सात लोगों को थी। यहां तक कि ऑपरेशन में शामिल पायलट्स की फैमिलीज तक को इसके बारे में कुछ नहीं पता था।

DEFENDER मासिक पत्रिका

WAMA

TACK

ऑपरेशन की तैयारियां 22 फरवरी से शुरू हुई। उस रात से भारतीय एयरफोर्स ने अपने कई एयरबेसेज से लड़ाकू विमानों की टेस्टिंग फ्लाइट शुरू कर दी। इन फ्लाइट्स का मकसद था दुश्मन को कंफ्यूज करना। कॉम्बैट एयर पैट्रोल्स (CAP) को लाइन ऑफ कंट्रोल (LoC) पर उड़ाया गया। यह भारत की एक चाल थी।

25 फरवरी को पुख्ता इंटेलिजेंस इनपुट मिला कि बालाकोट में जैश के कैंप में 300 से 350 आतंकवादी मौजूद हैं। सेना ने तय कर लिया कि रात के वक्त कार्रवाई को अंजाम दे दिया जाएगा। पीएम मोदी को थोड़ी देर बाद देर शाम को जानकारी दी गई कि अगले कुछ घंटों के भीतर हमारी वायुसेना सीमा पार कर दुश्मनों का काम-तमाम करने वाली है।

जब ये तय हो गया कि हम हमला करने के लिए तैयार हैं, तो NSA अजीत डोभाल ने अपने अमेरिकी समकक्ष जॉन बॉल्टन से टेलीफोन पर बात की। डोभाल ने उन्हें एयर स्ट्राइक की जानकारी देते हुए अपने देश की सुरक्षा के मद्देनजर इसकी जरूरत और ऐसा करने के अपने अधिकार के बारे में बताया।

स्ट्राइक में शामिल रहे एक IAF ऑफिसर के मुताबिक, "वह हमला ऐसे समय करना चाहते थे, जब सभी आतंकी एक जगह जमा हों। और यह रात का समय हो सकता था। 19 फरवरी को पूर्णमासी थी। मिशन के समय 3 से 4 बजे तक चांद क्षितिज से 30 डिग्री पर होना था। ऐसे में चांदनी एकदम आदर्श थी।"

25-26 फरवरी को कुमार की रिटायरमेंट पार्टी थी। मिशन सीक्रेट रहे, इसलिए उसे कैंसिल नहीं किया गया। हरि कुमार के मुताबिक, "पार्टी में मैंने वेटर को बुलाया और कहा कि जूस और चीनी से बनी नॉन-अल्कोहलिक ड्रिंक लाकर दो ताकि रंग व्हिस्की सा दिखाई दे। एयरचीफ बीएस धनोआ मुझे लॉन की तरफ ले गए। उन्होंने कहा कि जब ऑपरेशन हो जाए तो फोन पर सिर्फ 'बंदर' बोल देना।"

25 फरवरी को स्पाइस-2000 मिसाइल को मिराज 2000 लड़ाकू विमान पर लोड किया गया। मिसाइल सिस्टम में टारगेट के कोऑर्डिनेट्स फीड किए गए थे। 26 फरवरी की रात 2 बजे एयरफोर्स की टीम ने उड़ान भरी। जान-बूझकर लंबा रास्ता चुना गया।

अपनी मंजिल की तरफ बढ़ते IAF पायलट्स को रावलपिंडी के आसमान में पाक वायुसेना का एक टोही विमान गश्त करता दिखा। उसे वहां से भटकाने के लिए IAF दो सुखोई-30 और चार जगुआर विमानों को बहावलपुर की ओर तेजी से रवाना किया।

खतरा टल गया। हमारे फाइटर पोजिशन ले चुके थे। पहली एयरस्ट्राइक 3 बजकर 28 मिनट पर हुई और चार बजे तक मिशन पूरा हो गया था। सभी लड़ाकू विमान सुरक्षित लौटकर पश्चिमी कमान के दो अड्डों पर उतर गए। स्ट्राइक में शामिल मिराज 2000 लड़ाकू विमान के एक पायलट ने कहा था, 'मिशन 90 सेकंड में खत्म हो गया था। हमने हमला किया और फिर हम वापस आ गए।'

इस ऑपरेशन में मिराज 2000 और 2000i शामिल थे। सुखोई 30MKI को डिकॉय की तरह इस्तेमाल किया। वे मिराज को कवर भी दे रहे थे। एयरफोर्स के पास फाल्कन AWACS और एम्ब्रेयर AEWS मिड-एयर रिफ्यूएलर्स थे। हेरॉन ड्रोन को हमले के बाद टारगेट की तस्वीर खींचने के लिए तैनात किया गया था।

पुलवामा हमले के 12 दिन बाद सुबह जब देश के लोगों की आंखें खुली तो वे खुशी से झूम रहे थे क्योंकि 6 फरवरी को तड़के इंडियन एयर फोर्स के लड़ाकू विमानों ने पाकिस्तान के बालाकोट में मौजूद जैश-ए-मोहम्मद के कैंप पर बम बरसा उनका खात्मा कर दिया था और सही सलामत लौट आये थे। उस समय इस कैंप को मौलाना युसूफ अजहर संचालित कर रहा था। एयर स्ट्राइक में बड़ी संख्या में आतंकवादी, ट्रेनर और सीनियर कमांडर मारे गए थे।

DEFENDER मासिक पत्रिका

-ब्लैक डे 14 फरवरी

मूलशंकर से महर्षि दयानन्द

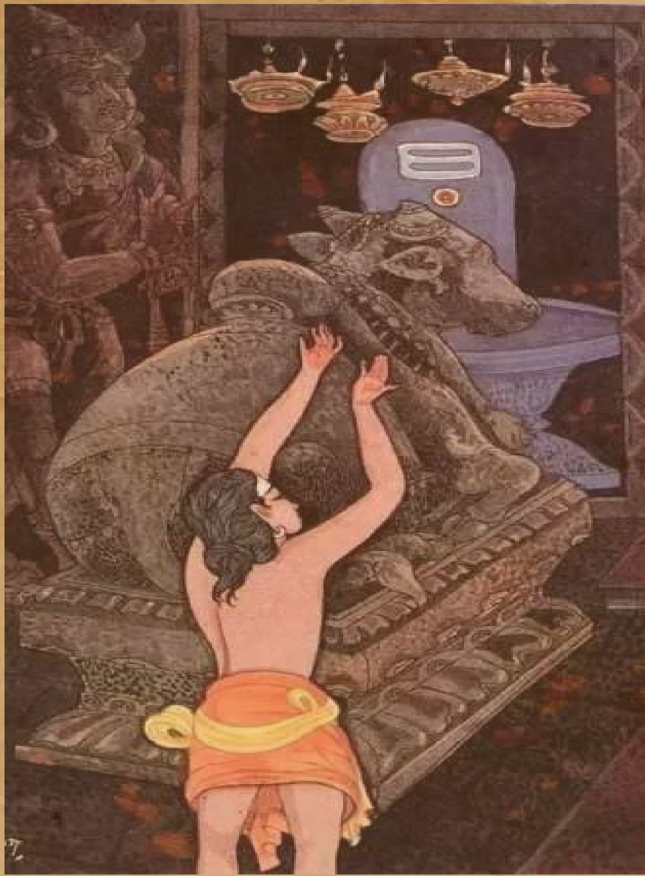

अब जहां भगवान की बात हो ही गई है तो हम भक्त को याद करना कैसे भुल सकते हैं। क्या आपको पता है आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती जी भगवान शिव के कितने बड़े भक्त थे !

15 फरवरी को महर्षि दयानंद सरस्वती जी, जिनका बचपन का नाम 'मूल शंकर' था, का **199वां जन्मदिवस** है, जिसे आर्य समाज 'ऋषि बोधोत्सव' के रूप में मानते है।

महर्षि दयानंद जी की आयु जब 14 वर्ष की थी तो उनके पिता कर्षन जी तिवारी ने उन्हें शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए कहा। उन्होंने अपने पिता के आदेश पर शिवरात्रि का व्रत रखा और रात को जागरण के लिए उनके साथ शिव मंदिर में गए। जब सभी सो गए तो बालक मूलशंकर शिव दर्शन की अभिलाषा से जागता रहा। कुछ देर के बाद उन्होंने देखा कि चूहे अपने बिल से निकल कर शिवलिंग पर उछल-कूद कर रहे हैं और चढ़ाए हुए प्रसाद को खा रहे हैं। उसी समय उन्होंने अपने पिता को जगा कर सच्चे शिव के बारे में पूछा परंतु उनके पिता उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाए और बालक मूलशंकर ने उसी समय सच्चे शिव की प्राप्ति का संकल्प ले लिया। इसी कारण शिवरात्रि का पर्व सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए कल्याण रात्रि बन गई जिसने केवल भारत को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को एक नई राह दिखाई।

मूलशंकर (महर्षि दयानन्द)

इस रात्रि को बालक मूलशंकर के मन में ज्ञान का जो अंकुर प्रस्फुटित हुआ था, वह महर्षि दयानंद के रूप में विशाल वटवृक्ष बनकर मानवता का उद्धारक बन गया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समस्त मानव जाति का जो उपकार किया है, महर्षि के उस ऋण को नहीं चुकाया जा सकता। जितना सन्मार्ग महर्षि दयानंद ने दिखाया है, जितनी कुरीतियों के विरुद्ध महर्षि दयानंद ने कार्य किया, उसके लिए उन्हें सदा याद रखा जाएगा।

महर्षि दयानंद ने धार्मिक क्षेत्र में पाखंड, मूर्ति पूजा, अंधविश्वास पर जमकर प्रहार किया। राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने स्वराज प्राप्ति पर जोर दिया। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने नारी जाति के उद्धार, विधवाओं की दुर्दशा को सुधारने और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया।

आर्य समाज के दस नियमों में महर्षि दयानंद अपने देश के हित को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व के हितों को समाहित किए हुए हैं, जिसका उदाहरण हमें आर्य समाज के छठे नियम में देखने को मिलता है- 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

आर्य समाज और महर्षि दयानंद का दृष्टिकोण सार्वभौम है। आर्य समाज के नियमों को बनाते समय महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समान का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे पूर्ण करने के लिए एकजुट होने की आवश्यकता है। उन्होंने मात्र अपने राष्ट्र और आर्य समाज का ही नहीं अपितु संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य बताया ताकि हम अपने उद्देश्य से भटक न जाएं।

महर्षि के मृत्यु का सच

क्या आपको पता है कि स्वामी दयानंद सरस्वती की मृत्यु कैसे हुई थी ? उनकी मृत्यु जहर पिने के वजह से हुई थी और ये जहर उन्हें किसी व्यक्ति ने दिया था। लेकिन आपको जानकर ये हैरानी होगी की उन्हें जहर देने वाला कौन था। वो एक स्त्री थी। जो की जोधपुर की एक वेश्या थी। जिसकी नाराजगी आर्य समाज के प्रणेता और महान समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती पर बहुत भारी पड़ी थी और उन्हें आखिरकार अपनी जान तक गंवानी पड़ी। स्वामी दयानंद सरस्वती से नाराज नन्ही नाम की वेश्या ने धोखे से उन्हें दूध में कांच का चूरा पिला दिया। इससे बीमार हुए स्वामी कभी उबर नहीं पाए और दीपावली के दिन उन्होंने देह त्याग दी।

वर्ष 1883 में वे जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्त सिंह के निमन्त्रण पर जोधपुर आए हुए थे। वहां उनके नित्य ही प्रवचन होते थे। यदाकदा महाराजा जसवन्त सिंह भी उनके प्रवचन सुनते। दो-चार बार स्वामी भी राज्य महलों में गए। वहां पर उन्होंने नन्ही नामक वेश्या का अनावश्यक हस्तक्षेप और महाराजा जसवन्त सिंह पर उसका अत्यधिक प्रभाव देखा। स्वामी दयानंद को यह बहुत बुरा लगा। उन्होंने महाराजा को इस बारे में समझाया तो उन्होंने विनम्रता से उनकी बात स्वीकार कर ली और नन्ही से सम्बन्ध तोड़ लिए। इससे नन्ही वैश्या स्वामी दयानंद से नाराज हो गई और उन्हें राह का रोड़ा मान उनको हटाने की जुगत भिड़ाने में जुट गई। उसने स्वामी दयानंद के रसोइए कलिया उर्फ जगन्नाथ को अपनी तरफ मिला कर उनके दूध में पिसा हुआ कांच डलवा दिया। खासियत की बात यह रही कि कांच मिश्रित दूध पिलाने के बाद नन्ही को बहुत पछतावा हुआ और उसने स्वामी दयानंद के पास जाकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया। नन्ही ने स्वामी से माफी मांगी तो उदार ह्रदय के साथ उन्होंने उसे क्षमा करते हुए कुछ पैसे देकर जोधपुर से चले जाने को कहा ताकि वह सजा से बच सके। बाद में जब स्वामी दयानंद को जोधपुर के अस्पताल में भर्ती करवाया गया। तब स्वामी दयानंद की तबीयत बहुत खराब होने लगी थी उसके बाद उन्हें अजमेर के अस्पताल में ले जाया गया, लेकिन तब तक काफी विलम्ब हो चुका था। स्वामी जी को बचाया नहीं जा सका और उन्होनें 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के दिन सन्ध्या के समय अपना देह त्याग दिया।

"लोगों को कभी भी चित्रों की पूजा नहीं करनी चाहिए, मानसिक अन्धकार का फैलाव मूर्ति पूजा के प्रचलन की वजह से है"

-महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती 15 फरवरी

रैदास तेरी भगति दूरी

संत रविदास ने अपने दोहों व पदों के माध्यम से समाज में जातिगत भेदभाव को दूर कर सामाजिक एकता पर बल दिया और मानवतावादी मूल्यों की नींव संत रविदास ने रखी। इतना ही नहीं वे एक ऐसे समाज की कल्पना भी करते थे जहां किसी भी प्रकार का लोभ, लालच, दुख, दरिद्रता, भेदभाव न हो। **रविदास जी ने सीधे-सीधे लिखा कि 'रैदास जन्म के कारने होत न कोई नीच, नर कूं नीच कर डारि है, ओछे करम की नीच' यानी कोई भी व्यक्ति सिर्फ अपने कर्म से नीच होता है। जो व्यक्ति गलत काम करता है वो नीच होता है। कोई भी व्यक्ति कभी जन्म से नीच नहीं होता।**

क्या आपको ये पता की संत रविदास कृष्णभक्त मीरा बाई के भी गुरु थे। हां ये सत्य है की राजस्थान की कृष्णभक्त कवयित्री मीराबाई की रविदास से मुलाकात का कोई आधिकारिक विवरण तो नहीं मिलता है, लेकिन कहते हैं मीरा के गुरु रविदास जी ही थे। माना जाता है की संत रविदास ने कई बार मीराबाई के ऊपर आने वाले उनके मुसीबतों से और उनकी जान भी बचाई थी।

आपने मीराबाई के कई पद पढ़े होंगे उनके पदों में ही उनके गुरु रविदास का पता चलता है।क्योंकि उन्होंने अपने कई पदों में उनका ज़िक्र किया है।

'गुरु मिलिआ संत गुरु रविदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी.'
'मीरा सत गुरु देव की करें वंदा आस. जिन चेतन आतम कहया धन भगवन रैदास..'

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी॥
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती॥
प्रभु जी, तुम मोती, हम धागा जैसे सोनहिं मिलत सोहागा॥

इस प्रसिद्ध पद से आप समझ गए होंगे की ये किसका प्रसिद्ध पद है। संत शिरोमणि कवि रविदास, कवि रविदास जी एक महान संत थे। माघ माह की पूर्णिमा के दिन संत रविदास की जयंती रहती है। इस बार यह जयंती अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार **5 फरवरी 2023** को रहेगी। रैदास जी का विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परहित – भावना तथा सदव्यवहार का पालन करना अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होंने बहुत बल दिया। अपने एक भजन में उन्होंने कहा –

"कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै।"

संत रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा को 1376 ईस्वी को हुआ था। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर के गोबर्धनपुर गांव में हुआ था। उनकी माता का नाम कर्मा देवी तथा पिता का नाम संतोख दास था। उनके पत्नी का नाम श्रीमती लोनाजी और पुत्र का नाम श्रीविजय दास जी है। रविदास जी चर्मकार कुल से थे जिसके कारण वे जूते बनाते थे। ऐसा करने में उन्हें बहुत खुशी मिलती थी और वे पूरी लगन तथा परिश्रम से अपना कार्य करते थे।

संत रविदासजी बचपन से ही भक्ति में लीन रहते थे। उनकी प्रतिभा को जानकर स्वामी रानानंद ने उन्हें अपना शिष्य बनाया। स्वामी रामानंदाचार्य वैष्णव भक्तिधारा के महान संत थे। संत कबीर, संत पीपा, संत धन्ना और संत रविदास उनके शिष्य थे। संत रविदास को संत कबीर के समकालीन व गुरुभाई माना जाता है। स्वयं कबीरदास जी ने 'संतन में रविदास' कहकर इन्हें मान्यता दी है। हालांकि इसका आधिकारिक विवरण नहीं मिलता कि उनके गुरु रामानंद थे।

_____BHM Pics

महंत एक नाम अनेक

— TotalBhakti

रविदाजी को पंजाब में रविदास कहा जाता था तो चीन, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान में उन्हें रैदास के नाम से ही जाना जाता है। गुजरात और महाराष्ट्र के लोग 'रोहिदास' और बंगाल के लोग उन्हें 'रुइदास' कहते हैं। कई पुरानी पांडुलिपियों में उन्हें रायादास, रेदास, रेमदास और रौदास के नाम से भी जाना गया है। कहते हैं कि माघ मास की पूर्णिमा को जब रविदास जी ने जन्म लिया वह रविवार का दिन था जिसके कारण इनका नाम रविदास रखा गया।

उनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में मुगलों का शासन था चारों ओर अत्याचार, गरीबी, भ्रष्टाचार व अशिक्षा का बोलबाला था। उस समय मुस्लिम शासकों द्वारा प्रयास किया जाता था कि अधिकांश हिन्दुओं को मुस्लिम बनाया जाए। संत रविदास की ख्याति लगातार बढ़ रही थी जिसके चलते उनके लाखों भक्त थे जिनमें हर जाति के लोग शामिल थे। यह सब देखकर एक परिद्ध मुस्लिम 'सदना पीर' उनको मुसलमान बनाने आया था। उसका सोचना था कि यदि रविदास मुसलमान बन जाते हैं तो उनके लाखों भक्त भी मुस्लिम हो जाएंगे। ऐसा सोचकर उसने रविदास पर कई प्रकार से दबाव बनाया था। लेकिन संत रविदास तो संत थे उन्हें किसी हिन्दू या मुस्लिम से नहीं मानवता से मतलब था।

संत रविदासजी बहुत ही दयालु और दानवीर थे। जब भी किसी को सहायता की आवश्यकता होती तो बिना पैसा लिए वे लोगों को जूते दान में दे देते थे। संत रविदास की खासियत ये थी कि वह बहुत दयालु थे। दूसरों की सहायता करना उन्हें अच्छा लगता था। कहीं साधु-संत मिले तो वे उनकी सेवा करने से पीछे नहीं हटते थे।

संत रविदास ने बहुत से कविताएं लिखी है और उन्होंने अपनी कविताओं के लिए जनसाधारण की ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। साथ ही इसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और रेख्ता यानी उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। रविदासजी के लगभग चालीस पद सिख धर्म के पवित्र धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहब' में भी सम्मिलित किए गए है।

यही नहीं वाराणसी में संत रविदास का भव्य मंदिर और मठ है। जहां सभी जाति के लोग दर्शन करने के लिए आते हैं। वाराणसी में श्री गुरु रविदास पार्क है जो नगवा में उनके यादगार के रुप में बनाया गया है जो उनके नाम पर 'गुरु रविदास स्मारक और पार्क' बना है।

मीराबाई के साथ साथ चित्तौड़ के राणा सांगा की पत्नी झाली भी संत रविदास की शिष्या बनीं थीं। वहीं चित्तौड़ में संत रविदास का छत्र बना हुआ है। मान्यता है कि वे वहीं से स्वर्गारोहण कर गए थे। हालांकि इसका कोई आधिकारिक विवरण नहीं है लेकिन कहते हैं कि वाराणसी में 1540 ईस्वी में उन्होंने अपना नश्वर देह छोड़ दी थी।

रविदास कहते थे - **रविदास जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच।**
नकर कूं नीच करि डारी है, ओछे करम की कीच।।

इसका अर्थ है कि 'कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा अपने जन्म के कारण नहीं बल्कि अपने कर्म के कारण होता है। व्यक्ति के कर्म ही उसे ऊंचा या नीचा बनाते हैं। संत रविदास जी सभी को एक समान भाव से रहने की शिक्षा देते थे।

जाति-जाति में जाति हैं, जो केतन के पात।
रैदास मनुष ना जुड़ सके जब तक जाति न जात।।
रैदास कनक और कंगन माहि जिमि अंतर कछु नाहिं।
तैसे ही अंतर नहीं हिन्दुअन तुरकन माहि।।
हिंदू तुरक नहीं कछु भेदा सभी मह एक रक्त और मासा।
दोऊ एकऊ दूजा नाहीं, पेख्यो सोइ रैदासा।।

-गुरु रविदास जयंती 5 फरवरी

DEFENDER मासिक पत्रिका

74वां ऐतिहासिक गणतंत्र

देशभर में हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस साल अपना देश 75वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। हर वर्ष की तरह इस बार भी हर्षोल्लास और धूमधाम से इस राष्ट्रीय त्योहार का जश्न मनाया जाएगा। तिरंगा फहराने के साथ ही 26 जनवरी की परेड का भी लोग इस दिन आनंद उठाते हैं। हालांकि हर बार गणतंत्र दिवस आते ही कई लोगों के मन में यह सवाल आता होगा कि आखिर 26 जनवरी को ही गणतंत्र दिवस क्यों मनाया जाता है। अगर आपके मन में भी इस तरह का सवाल आता है तो आज हम आपको बताएंगे कि देश को गणतंत्र घोषित करने के लिए 26 जनवरी की तारीख को ही क्यों चुना गया। तो चलिए जानते हैं इसके पीछे दिलचस्प इतिहास के बारे में-यह तो हम सब जानते ही है कि गणतंत्र दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि इस दिन हमारे देश का संविधान लागू किया गया था। साल 1950 में भारत को एक गणतंत्र राष्ट्र घोषित किया गया था। इसी दिन को चिन्हित करने के लिए हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। यह दिन भारतीय नागरिकों की लोकतांत्रिक रूप से अपनी सरकार चुनने की शक्ति को दर्शाता है। लेकिन क्या आप जानते है कि संविधान लागू करने के लिए 26 जनवरी की ही तारीख क्यों चुनी गई। इस दिन संविधान लागू करने के पीछे एक खास मकसद था, जिसे शायद ही ज्यादा लोग जानते होंगे।

दरअसल, भारत में ब्रिटिश शासन से 15 अगस्त 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की थी। लेकिन बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि आजादी से पहले तक 26 जनवरी को ही स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता था। 31 दिसंबर, 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक प्रस्ताव पारित हुआ। इस प्रस्ताव में यह मांग की गई थी कि अगर ब्रिटिश सरकार ने 26 जनवरी 1930 तक भारत को डोमीनियन स्टेट का दर्जा नहीं दिया तो, भारत को पूर्ण स्वतंत्र घोषित कर दिया जाएगा। इसी के बाद 26 जनवरी, 1930 को पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इसी दिन जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा फहराया था।

हालांकि, बाद में 1947 में मिली आजादी के बाद 15 अगस्त को आधिकारिक रूप से स्वतंत्र दिवस घोषित कर दिया गया। वहीं 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव लागू होने की इस तिथि को महत्व देने के लिए ही संविधान लागू करने के लिए 26 जनवरी का दिन चुना गया था। 26 नवंबर, 1949 में भारत का संविधान बनकर पूरी तरह तैयार हो चुका था। लेकिन 26 जनवरी की महत्ता को देखते हुए इसी दिन साल 1950 में संविधान लागू किया गया और देश को पूर्ण गणतंत्र

Participation of the
‘Common People’

घोषित किया गया। इसी साल पहली बार आजाद भारत में अपना गणतंत्र दिवस मनाया था और तब से लेकर आज तक हर साल 26 जनवरी के दिन गणतंत्र दिवस मनाया जाता है।

लेकिन इस बार 26 जनवरी और 'राज पथ' जो की अब 'कर्तव्य पथ' है की परेड में सिर्फ VIP, VVIP नहीं बल्कि रिक्शा चालकों से लेकर सब्जी विक्रेताओं को भी एक स्पेशल निमंत्रण मिला। श्रमजीवी, यानी की वो लोग जिन्होंने सेंट्रल विस्टा को बनाने में मदद की, उनका परिवार, कर्त्वय पथ के रख-रखाव करने वाले कार्यकर्ता गणतंत्र दिवस के दिन होने वाले आयोजन के मुख्य मंच के सामने बैठा। इस बार के गणतंत्र दिवस का थीम - “पार्टिसिपेशन ऑफ़द कॉमन पीपल” था। इस आयोजन में Egypt के राष्ट्रपति अब्देल फत्ताह अल-सिसी मुख्य अतिथि थे।
पिछले कुछ सालों से केंद्र सरकार ने सरकारी आयोजनों और कार्यक्रमों में आम आदमी का रिप्रजेंटेशन बढ़ाने पर खासा काम किया हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ही पिछले साल ऑटोरिक्शा चालकों, निर्माण श्रमिकों, सफाई कर्मचारियों और अग्रिम पंक्ति के श्रमिकों को देश के भव्य आयोजन रिपब्लिक डे परेड के लिए निमंत्रण भी दिया था।

सितम्बर 2022 में प्रोजेक्ट सेंट्रल विस्टा का उद्घाटन हुआ था, और राजपथ के नाम से जाने वाले पथ का नाम बदल कर कर्तव्य पथ कर दिया गया था। उसके बाद इस साल ये पहला गणतंत्र दिवस आयोजित किया गया था । परेड की सीट 45,000 से घटाकर 32,000 कर दी गई। साथ ही बीटिंग रिट्रीट की टिकट्स आम जनता के लिए सिर्फ 10% ही अवेल की गई।

Republic Day parade 2023 के अलावा लाल किले पर मिनिस्ट्री ऑफ़ ट्राइबल अफेयर्स और मिनिस्ट्री ऑफ़डिफेन्स की तरफ से कई कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के आर्ट फॉर्म्स और खाने के प्रदर्शन हुए। और इस कार्यकर्म को भारत पर्व के नाम से पहचान दी गई। साथ ही फ्लाईपास्ट में 18 हेलीकॉप्टर, 8 ट्रांसपोर्टर विमान और 23 लड़ाकू विमान शामिल थे। इसके अलावा, Egypt से 120 लोगों का मार्चिंग दस्ता भी परेड में शामिल हुआ।

प्रियंका सिंह

PULWAMA ATTACK

“लोग **गुलाब** देकर मोहब्बत जताते हैं और हमारे **सैनिक** **अपनी जान** देकर देश का कर्ज अदा करते हैं”

40 हज़ार परिवार हुए घर से बेघर ....?

हल्द्वानी की रेलवे भूमि इस वक्त काफी चर्चा का विषय बनी हुई है। जिसमें 4000 परिवारों के बेघर हो जाने तक की नौबत आन पड़ी है। लेकिन इस बारे में जानने से पहले आपको ये बता दें की यह शहर कैसा था और कैसे बसा। उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल का सबसे बड़ा शहर हल्द्वानी है, जो समुद्री तल से 424 मीटर ऊंचाई पर है। हल्द्वानी की स्थापना सन 1834 में हुई थी, उस समय हल्द्वानी पहाड़ को बाजार नाम से जाना जाता था। तब यहां हल्दू के पेड़ अधिक संख्या में पाए जाते थे जिस कारण इस शहर का नाम हल्द्वानी पड़ा। उत्तराखंड में हल्द्वानी तीसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। यह कुमाऊं क्षेत्र का सबसे बड़ा शहर कहलाता है। हल्द्वानी शहर को कुमाऊं के प्रवेश द्वार के रूप में भी जाना जाता है।हल्द्वानी शहर को लेकर मुगल इतिहासकारों का कहना है कि 14वीं शताब्दी में, एक स्थानीय शासक चंद वंश के ज्ञान चंद ने दिल्ली सल्तनत का दौरा किया और सुल्तान से अनुदान के रूप में गंगा तक भाभार-तराई के क्षेत्रों को प्राप्त किया। बाद में, मुगलों ने पहाड़ियों पर कब्जा करने की कोशिश की लेकिन क्षेत्र की कठिन पहाड़ी भूमि के कारण वे सफलता प्राप्त नहीं कर सके।सन् 1816 में यहां जब राजा रूपचंद का शासन हुआ करता था, तब से ही ठंडे स्थानों से लोग यहां सर्दियों का समय व्यतीत करने के लिये आया करते थे। सन् 1815 में जब यहां गोरखों का शासन था तब अंग्रेज कमिश्नर गार्डनर के नेतृत्व में अंग्रेजों ने गोरखों को यहां से भगाया। गार्डनर के बाद जब जॉर्ज विलियम ट्रेल यहां के कमिश्नर बन कर आये तब उन्होंने इस हल्द्वानी शहर को बसाने का काम शुरू किया। ट्रेल ने सबसे पहले अपने लिये यहां बंग्ला बनाया, जिसे आज भी "खाम का बंग्ला" कहा जाता है। सन् 1882 में रैमजे ने पहली बार नैनीताल से काठगोदाम तक एक सड़क का निर्माण करवाया था।हसील का कार्यालय 1899 में यहां खोला गया, जब वह नैनीताल जिले के चार हिस्सों में से एक भाभर के तहसील मुख्यालय बन गया। इसमें 4 कस्बों और 511 गांव शामिल थे. 1,297 वर्ग मीटर में फैली 93,445 की कुल जनसंख्या थी। सन् 1907 में हल्द्वानी को शहर क्षेत्र का दर्जा मिला था। हल्द्वानी-काठगोदाम नगर परिषद की स्थापना 21 सितंबर 1942 को हुई थी। वर्तमान में "हल्द्वानी" हरिद्वार के बाद उत्तराखंड का दूसरा सबसे बड़ा नगर परिषद है।लेकिन इस वक्त हल्द्वानी में रेलवे भूमि के अतिक्रमण को लेकर विवाद छिड़ गया है। वहीं इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने 3 जनवरी को बड़ा फैसला सुनाया। जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने नैनीताल हाईकोर्ट के फैसले पर रोक लगा दी। जिससे 4000 परिवारों को फिलहाल राहत मिली है। अब 7 फरवरी तक

अतिक्रमण को नहीं हटाया जा सकता और मामले की सुनवाई अब 7 फरवरी को होनी है। लेकीन इस अतिक्रमण की कहानी क्या है कैसे शुरू हुई ये आइए जानते है। लोगों ने जब रेलवे ट्रैक के किनारे बसना शुरू किया था तो शायद उन्हें पता नहीं था कि एक ऐसा दौर भी आएगा। जब यहां एक बड़ी सी लकीर खींच दी जाएगी। रेलवे के जिस भूमि पर अतिक्रमण है वहां इस समय 4365 परिवार रह रहे हैं। जिसमें करीब 40 हजार लोग रहते हैं। 40 साल पहले काम धंधे की तलाश में बसे अतिक्रमण धीरे-धीरे जगह को बस्ती में तब्दील करने लगे। बस्ती में तब्दील होने के बाद यहां पानी की लाइनें बिजली के पोल लगने लगे। हालांकि कि रेलवे के सीमांकन के दौरान सरकारी विभागों को भी चिन्हित कर दिया गया है। जिसमें 5 सरकारी स्कूल, 1 अस्पताल, 2 मंदिर,10 मस्जिद 3 दरगाह है। इसके साथ-साथ संस्थान के दो नलकूप और ओवरहेड टैंक बिजली की लाइन व स्ट्रीट लाइट भी शामिल है। इसके इसके बाद 40 हजार की आबादी होते हुए भी वोटर्स की संख्या 15000 तक पहुंच गई जब राशन कार्ड के बाद वोटर कार्ड बने और लोगों ने वोट डालना शुरू किया तो यह जगह पूरी तरह से बस्ती में तब्दील हो चुकी थी।

शायद आपको पता न हो की अधिक्रमित रेलवे भूमि पर 45 हजार बिजली कनेक्शन है। इसके अलावा ऊर्जा निगम ने करीब 9 महीने पहले ही अधिक्रमित क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति के तार, बिजली के पोल, ट्रांसफार्मर हटाने के लिए 80 लाख का प्रस्ताव भेजा था। इसके बाद रेलवे स्टेशन की भूमि पर कब्जा खाली करने के लिए डेढ़ दशक पहले वृहद स्तर पर अभियान भी चलाया गया था। पूरे इलाके को छावनी में तब्दील कर दिया गया था। इसके साथ ही 2 दिन तक चले इस अभियान में काफी बड़े इलाके को खाली करने में सफलता भी हासिल हुई थी। कब्जा हटाने के दौरान लोगों के घरों के नीचे से रेलवे की पटरी तक निकाली गई थी। लेकिन बाद में अधिकारियों की ढिलाई के चलते दोबारा रेलवे की जमीनों पर अतिक्रमियों का कब्जा हो गया था। जिसके बाद कब्जा हटाने के दौरान पुलिस और प्रशासन को लोगों के विरोध का सामना भी करना पड़ा था। और काफी प्रयासों के बाद रेलवे भूमि पर दोबारा से कब्जा खाली कराने में अधिकारी सफल हुए। बाद में प्रदर्शनकारी विरोध स्वरूप नैनीताल रोड पर उतर गए और डीएम कैंप कार्यालय को घेर लिया। जिसके बाद इस कार्यवाही को रोकना पड़ा। बाद में गोलापार निवासी आरटीआई कार्यकर्ता रविशंकर जोशी ने हाईकोर्ट में अतिक्रमण हटाने को लेकर याचिका दायर की जिसे लेकर 20 दिसंबर को हाईकोर्ट ने इस बार रेलवे अतिक्रमण खाली कराने को लेकर जो अस्पष्ट दिशा निर्देश दिए। उससे ये साफ है कि इसमें कोताही की कोई गुंजाइश नहीं बचती है। लेकिन वहीं कोर्ट के इस फैसले से लोगों को अब आंशिक राहत मिली है। हल्द्वानी सीट के चुनावी अतीत की अगर बात करें तो यह कांग्रेस का गढ़ रहा है और अभी तक यहां 4 चुनाव हो चुके हैं जिसमें से तीन बार कांग्रेस के उम्मीदवारों की जीत हुई है। तो जो विरोध कांग्रेस अब कर रही है इस मुद्दे को लेकर तो क्या उन्हें ये पहले से नहीं पता था की ये जमीन सरकार की है। हल्द्वानी विधानसभा सीट से कांग्रेस की कद्दावर नेता कही जाने वाली इंदिरा हृदयेश हल्द्वानी की विधायक थीं। जिसके बाद अब उनके बेटे विधायक पद पर हैं। लेकिन सवाल यहां ये है कि हल्द्वानी सीट से तीन बार की विधायक इंदिरा हृदयेश विधानसभा में विपक्ष की नेता भी थीं तो क्या उनका यह फर्ज नहीं बनता था कि वह अपनी जनता के बारे में सोचें या उनके लिए कुछ करके दिखाएं जिससे उन्हें जो आज इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है वह नहीं करना पड़ता।

——— प्रियंका सिंह

डिजिटल मार्केटिंग

आज के डिजीटल युग में, विज्ञापन और मार्केटिंग के हमारे पारंपरिक तरीके बदल गए हैं और डिजिटल मार्केटिंग का आकार ले लिया है। चाहे वह एक छोटा उद्यम हो या एक शीर्ष फर्म, डिजिटल उपस्थिति सभी के लिए सार्वभौमिक है। डिजिटल मार्केटिंग केवल डिजिटल कंपनियों तक ही सीमित नहीं है, स्वास्थ्य सेवा, वित्तीय सेवाओं, शिक्षा, फिटनेस, सौंदर्य सेवाओं और मनोरंजन उद्योग जैसे सभी क्षेत्रों में डिजिटल मार्केटिंग की मांग बढ़ रही है। ऐसे में इस डिजिटल युग में आप भी अपना करियर बना सकते हैं।

डिजिटल मार्केटिंग आज एक ऐसा क्षेत्र बन गया है, जहां आप लाखों की कमाई कर सकते है। डिजिटल मार्केटिंग को जानने से पहले आपको ये जानना जरुरी है कि यह होता क्या है ?डिजिटल मार्केटिंग इंटरनेट, कम्प्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के जरिये की जाने वाली मार्केटिंग होती है। आप इसे ऑनलाइन मार्केटिंग भी कह सकते हैं। ऐसे तो डिजिटल मार्केटिंग में सोशल मीडिया, मोबाइल, ईमेल, सर्च इंजिन ऑप्टिमाइजेशन (एसईओ) आदि को टूल की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

डिजिटल मार्केटिंग करने के लिए इंटरनेट एकमात्र साधन है, लेकिन डिजिटल मार्केटिंग एक छोटा सा शब्द नहीं है ये एक व्यापक शब्द है जिसमें और भी कई प्रकार शामिल है जिसके बारे में हम आपको नीचे एक छोटी सी जानकारी दे रहे है -

सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (SEO): यह एक ऐसी तकनीक (माध्यम) है जो आपकी वेबसाइट को सर्च इंजन के परिणाम पर सबसे ऊपर जगह दिलाता है जिससे व्यूअर्स की संख्या में वृद्धि होती है। इसके लिए हमें अपनी वेबसाइट को कीवर्ड्स और SEO गाइडलाइन्स के मुताबिक बनाना होता है।

सोशल मीडिया: सोशल मीडिया कई प्रकार की वेबसाइटों जैसे Facebook, Twitter, Instagram, LinkedIn आदि से मिलकर बना है। सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावों को हजारों लोगों के सामने रख सकता है। जैसा कि आप सब ने देखा होगा कि जब हम ये साइटों को देखते हैं, तो इस पर थोड़ी-थोड़ी देर में विज्ञापन दिखते हैं यह विज्ञापन

आपकी पसंद से जुड़े हो भी सकते हैं और नहीं भी।

ईमेल मार्केटिंग: ईमेल मार्केटिंग हर प्रकार से हर कंपनी के लिए आवश्यक है क्योंकि कोई भी कंपनी नये प्रस्ताव और छूट ग्राहकों को समय अनुसार इसके द्वारा देते हैं जिसके लिए ईमेल मार्केटिंग, डिजिटल विपणन का एक सुगम रास्ता है। किसी भी कंपनी द्वारा अपने उत्पादों को ईमेल द्वारा पहुंचाने को ईमेल मार्केटिंग कहते है।

यूट्यूब चैनल: यूट्यूब, सोशल मीडिया मार्केटिंग का एक ऐसा माध्यम है जिसमे उत्पादक अपने प्रोडक्ट्स को लोगों के सामने सीधा पहुंचा सकता है।

एफिलिएट मार्केटिंग: वेबसाइट, ब्लॉग और लिंक्स के माध्यम से उत्पादों के विज्ञापन करने को एफिलिएट मार्केटिंग कहा जाता है। इसके अन्तर्गत आप अपना लिंक बना कर अपने उत्पाद को उस लिंक पर अपलोड करते हैं। जब ग्राहक उस लिंक द्वारा आपका उत्पाद खरीदता है तो आपको उस पर मेहनताना मिलता है।

एप्स मार्केटिंग: इंटरनेट पर अलग-अलग प्रकार के एप्स बनाकर लोगों तक पहुंचने और उन एप्स द्वारा अपने उत्पाद का प्रचार करने को ही एप्स मार्केटिंग कहते हैं । आजकल बड़ी संख्या में लोग स्मार्टफोन्स का उपयोग कर रहे हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने एप्स बनाती हैं और एप्स को लोगों तक पहुंचाती है।

डिजिटल मार्केटिंग भविष्य का कोर्स है हालांकि इस क्षेत्र में आज मौके जितने शानदार हैं उससे कहीं ज्यादा भविष्य में शानदार मौके मिलेंगे। आने वाला कल इंटरनेट का है और इसलिए कंपनियां भी अपनी विज्ञापन के कैंपेन को इंटरनेट पर ही ज्यादा आगे बढ़ाना चाहती हैं। डिजिटल मार्केटिंग में अगर आपको अच्छा करियर बनाना है तो आपको एमबीए डिजिटल मार्केटिंग में करना चाहिए। यह एमबीए इन मार्केटिंग से थोड़ा अलग है क्योंकि सामान्य एमबीए मार्केटिंग में सभी तरह की मार्केटिंग के बारे में पढ़ाया जाता है लेकिन डिजिटल मार्केटिंग में केवल डिजिटल मार्केटिंग की पढ़ाई होती है। इसमें वेबसाइट्स, सोशल नेटवर्क, गूगल एड, सर्च रिजल्ट आदि के बारे में पढ़ाया जाता है।

आज इस नौकरी के लिए कोई सीमा नहीं है। लाखों कंपनियां है जो इंटरनेट के जरिए बिजनेस करती हैं और इनमें से अधिकतर को डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर की जरूरत पड़ती है। टूरिज्म, बैंकिंग, रीटेल, मीडिया, हॉस्पिटेलिटी आदि कंपनियों को डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर की जरूरत पड़ती है। आपके इस कोर्स के करने से आपको विदेशी कंपनियों में भी नौकरी का मौका मिल सकता है।
पहले तो इस फील्ड में काम करने के लिए ग्रेजुएट होना आवश्यक है। जो छात्र मार्केटिंग, कम्युनिकेशन या फिर ग्राफिक डिजाइन में ग्रेजुएट हैं, वे डिजिटल मार्केटिंग में करियर बना सकते हैं।

डिजिटल मार्केटिंग में सर्टिफिकेट कोर्स 3 से 6 महीने का होता है। बैचलर कोर्स जैसे BBA आदि 3-4 साल का होता है। इसके साथ ही डिजिटल मार्केटिंग में पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स 2 साल का होता है।

इस डिजिटल मार्केटिंग के कोर्स को करने के बाद आपको शुरुआत में 4-5 लाख सालाना का पैकेज का मिल जाता है लेकिन अनुभव के साथ यह बढ़ता जाता है। कई अनुभवी डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर 2-2.5 लाख रुपए महीना भी कमाते हैं।डिजिटल मार्केटिंग की सबसे अच्छी बात यह है कि यह अभी उभरता हुआ कारोबार है। इसमें ऐसा दावा कोई नहीं कर सकता कि उसे सब कुछ मालूम है। आप अपने इंटरेस्ट को देखते हुए आगे बढ़ सकते हैं और मोटी कमाई कर सकते हैं। इसमें खुद को हमेशा ही अपडेट करते रहना पड़ता है। समय के साथ ही प्रोफेशनल और एक्सपर्ट लोगों की मांग इस क्षेत्र को लेकर बढ़ने वाली है। आप अपने पसंद और ना पसंद को देखते हुए डिजिटल की किसी भी फील्ड को चुनकर आप मजबूत करियर पाने के साथ-साथ अच्छा पैसा भी कमा सकते हैं।

आजकल हर व्यक्ति अपने व्यापार को ऑनलाइन ले जाना चाहता है। व्यापार ऑनलाइन जाने से आप किसी भी डेमोग्राफिक्स के कस्टमर को आसानी से टारगेट कर सकते हैं। डिजिटल मार्केटिंग आपको कम पैसों में भी अड्वरटिसजमेंट का अच्छा मौका देता है।

1. ग्लोबल रीच – डिजिटल मार्केटिंग की सहायता से आप पूरी दुनिया में कस्टमर बना सकते हैं। वही बात किया जाए पारंपरिक मार्केटिंग चैनल की तो यह करना लगभग असंभव है। पारंपरिक मार्केटिंग में आपको फिजिकली उस देश में उपस्थित रहना होगा।

2. लो कॉस्ट– पारंपरिक मार्केटिंग से तुलना करें तो नीचे मार्केटिंग करना काफी किफायती है। कई बार तो आप फ्री हुए भी मार्केटिंग चालू कर सकते हैं। इसके लिए आपको SEO का सहारा लेना होगा।

3. हर स्टेज पर अनुकूल करें – डिजिटल मार्केटिंग में आप अपने रणनीति को प्रत्येक स्टेज पर अनुकूल कर सकते हैं। और इस कारण आपको अच्छा रूपांतरण दर भी मिल सकता है।

4.लोगों का भरोसा जीते – डिजिटल मार्केटिंग की सहायता से आप आसानी से लोगों का भरोसा जीत सकते हैं। जब लोग देखेंगे आपका ब्रांड ऑनलाइन भी उपस्थित है तो उनका भरोसा बढ़ जाता है।

5. विभाजन – वह प्रक्रिया है जिसमें बड़े कस्टमर को छोटे-छोटे कस्टमर में बांटा जाता है। यह आप उनके व्यवहार को देखते हुए कर सकते हैं। इससे आपका समय, पैसा और मेहनत तीनों की बचत होगी। विभाजन करने से कस्टमर को अच्छी सर्विस देना आसान होगा।

इसके साथ ही हम आपको कुछ टॉप भारतीय डिजिटल मार्केटिंग संस्थान के बारे में भी बता रहे है - सिम्पलीलर्न, बैंगलोर

AIMA- अखिल भारतीय प्रबंधन संघ, दिल्ली
DSIM- दिल्ली स्कूल ऑफ इंटरनेट मार्केटिंग, दिल्ली और बैंगलोर
लर्निंग कैटलिस्ट, मुंबई
डिजिटल विद्या, पूरे भारत में शाखाएं हैं
नई दिल्ली वाईएमसीए, दिल्ली
Zica, इंदौर डिजिटल मार्केटिंग संस्थान-आईडीएम, मुंबई
इंटरनेट मार्केटिंग स्कूल, कोलकाता

डिजिटल मार्केटिंग कोर्स करने के लिए आपकी फीस कई कॉलेजों में अलग-अलग होती है। एक अनुमान से डिजिटल मार्केटिंग कोर्स की फीस INR 15-60 हजार तक की फीस हो सकती है। डिजिटल मार्केटिंग में करियरऔर डिजिटल मार्केटिंग क्या है जानने के साथ यह भी जानना चाहिए कि इसमें क्या-क्या करियर प्रोफाइल हो सकती हैं, जो नीचे दी गई हैं-

कंटेंट मार्केटर, कॉपीराइटर, कन्वर्शन रेट ऑप्टिमाइजेशन,
PPC मैनेजर/एग्जीक्यूटिव, SEO एग्जीक्यूटिव/मैनेजर,
SEM मैनेजर/एक्सपर्ट, सोशल मीडिया मैनेजर/एग्जीक्यूटिव,
ई-कॉमर्स मैनेजर, एनालिटिकल मैनेजर,
CRM & ईमेल मार्केटिंग मैनेजर,
वेब डिजाइनर/डेवलपर और डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर/निदेशक,
SEO एग्जीक्यूटिव/मैनेजर ।

—— काजल चौधरी

क्रिप्टो का काला सच

हम 21 वीं सदी में हैं और हर सेक्टर ऑनलाइन या डिजिटल हो चूका है । पूरी दुनिया डिजिटली काम कर रही है । ऐसे में आपने डिजिटल करेंसी के बारे में भी सुना होगा ।क्रिपटो करेंसी या बिटकॉइन जैसे शब्द कहीं न कहीं आपके सामने आ ही जाते होंगे । तो चलिए आपको क्रिपटो करेंसी के बारे में थोड़ा बताते है और आजकल मार्केट में उसको लेकर क्या अपडेट है , उससे रूबरू करवाते हैं । बहुत ही कम समय में क्रिपटो करेंसी ने फाइनेंशियल मार्केट में अपनी मजबूती जाहिर कर दी है। जैसे आप कोई भी सामान खरीदते है तो आप उसके बदले करेंसी देते है , उसको हम फिजिकल करेंसी कहते हैं । लेकिन क्रिपटो करेंसी एक डिजिटल करेंसी है, क्यूंकि ये केवल ऑनलाइन ही उपलब्ध है। करेंसी होती क्या है? तो इसका जवाब है, एक ऐसी धन-प्रणाली, जो किसी देश द्वारा मान्यता प्राप्त हो और वहाँ के लोगों द्वारा धन के माध्यम के रूप में इस्तेमाल की जाती हो। साथ ही जिसकी कोई कीमत हो, जो करेंसी कहलाती है,मतलब जिसके बदले कोई वस्तु या सेवा खरीदी जा सके, वह करेंसी है।

क्रिपटो करेंसी को डिजिटल मनी भी कहा जा सकता है । यह एक तरह का डिजिटल एसेट होता है जिसका इस्तमाल चीज़ों की खरीदारी या सेवा के लिए किया जाता है। इन करेंसी में क्रिप्टोग्राफी का इस्तमाल होता है और क्रिपटो करेंसी के ऊपर सरकार का कोई भी हाथ नहीं होता है क्यूंकि ये डिसेंट्रलाइज्ड करेंसी होती हैं इसलिए इनके ऊपर कोई भी एजेंसी या सरकार या कोई बोर्ड का अधिकार नहीं होता, जिसके चलते इसके मूल्य को रेगुलेट नहीं किया जा सकता। इसका इस्तमाल हम इंटरनेट के माध्यम से रोजाने के करेंसीज के जगह में गुड्स और सर्विसेज को परचेज करने के लिए कर सकते हैं। लेकिन क्युकी इस व्यवस्था में सरकार या बैंक्स को बिना बताए भी काम हो सकता है इसलिए कुछ लोगों का मानना है की क्रिपटो करेंसी का इस्तमाल गलत तरीके से भी किया जा सकता है । बेशक क्रिपटो करेंसी को नोट और सिक्कों के रूप में प्रिंट नहीं किया जाता। लेकिन फिर भी इसकी अपनी जगह है। यानि कि क्रिपटो करेंसी से आप सामान खरीद सकते हैं, ट्रेड कर सकते हैं और इन्वेस्ट भी कर सकते हैं। लेकिन अपनी तिजोरी में नहीं रख सकते न ही बैंक के लॉकर में रख सकते हैं। क्योंकि यह डिजिट्स के रूप में ऑनलाइन रहती है।

बात करें क्रिपटो करेंसी वैल्यू की तो इसकी वैल्यू फिजिकल करेंसीज से कहीं ज्यादा है और कुछ टॉप क्रिपटो करेंसी की कीमत तो डॉलर से भी हजारों गुना ज्यादा है। लेकिन एक सच यह भी है कि यह कीमत स्थिर नहीं रहती यानि कि क्रिपटो करेंसी मार्केट में बहुत ही तेजी से उतार चढ़ाव होता है। जिससे इसकी कीमतें दिन में कई बार बदलती हैं।

अगर हम सभी क्रिपटो करेंसी बात करें तो उनमें से जो सबसे पहले प्रसिद्ध हुआ वो है बिटकॉइन। इसे सबसे ज्यादा इस्तमाल में भी लाया जाता है। बिटकॉइन को लेकर काफी विवाद आयीं लेकिन आज भी बिटकॉइन क्रिपटो करेंसी में सबसे ऊपर है। बिटकॉइन दुनिया की सबसे महंगी वर्चुअल करेंसी है। बिटकॉइन 2009 में 'संतोषी नाकामोटो' के छद्मनाम से किसी व्यक्ति या समूह द्वारा लांच किया गया।

लेकिन बिटकॉइन इस दुनिया की अकेली क्रिपटो करेंसी नहीं है। इसके अलावा भी काफी क्रिपटो करेंसी हैं। जिनके बारे में ज्यादातर लोगों को पता नहीं है। तो चलिए आपको बताते हैं उनके बारे में

1. एथेरियम- एथेरियम ओपन सोर्स, डिसेंट्रलाइज ब्लॉकचैन बेस्ड कम्प्यूटिंग प्लेटफार्म है। इसके फाउंडर का नाम है वितालिक बूटेरिन। इसके क्रिपटो करेंसी टोकन को 'एथर ' भी कहा जाता है।

2. लाइट कॉइन के ब्लॉक जेनरेशन के समय बिटकॉइन के मुकाबले 4 गुना कम है। इसलिए इसमें ट्रांजेक्शन बहुत हो जल्दी पूर्ण हो जाती हैं। इसमें स्क्रिप्ट एल्गोरिथम का इस्तमाल होता है माइनिंग करने के लिए।

3. डागी कॉइनजे- इसके फाउंडर का नाम है बिली मारकुस है।आज डागी कॉइनजे की मार्केट वैल्यू है $197 million से भी ज्यादा और इसे पुरे विश्व में 200 मर्चेंट से भी ज्यादा में अपनाया जाता है। इसमें भी माइनिंग दूसरों के मुकाबले बहुत जल्दी होती है।

4. टेथर

- ये बिटकॉइन की ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी का इस्तमाल करता है। स्थिर मुद्रा अमेरिकी डॉलर और यूरो में आंकी गई अस्थिरता को कम करती है, और क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने के इच्छुक लोगों के लिए सबसे लोकप्रिय विकल्पों में से एक है, लेकिन अस्थिरता का सामना करने के लिए अनिच्छुक हैं।

और इनके अलावा काफी सारे ऑप्शन मौजूद हैं ।

अगर बात करें इंडियन क्रिपटो करेंसी मार्केट की, तो भारत में CoinSwitch, CoinDCX, WazirX और Unocoin सबसे पॉपुलर क्रिपटो करेंसी एक्सचेंज हैं। जिनकी मदद से आप बिटकॉइन से लेकर एथरियम, XRP, YFI, YFII, Doge और Tron जैसे सैंकड़ों क्रिप्टो Coins खरीद सकते हैं। और INR में पेमेंट कर सकते हैं। भारत में WazirX सबसे पॉपुलर और भरोसेमंद क्रिपटो करेंसी एक्सचेंज है।

आखिर क्रिप्टो ही क्यों ?

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल करेंसी है। इसमें फ्रॉड की गुंजाइश बहुत कम है।

क्रिप्टोकरेंसी को खरीदना, बेचना और इन्वेस्ट करना बहुत आसान है। क्योंकि इसके लिए कई सारे डिजिटल वॉलेट उपलब्ध हैं।

क्रिप्टोकरेंसी के लिए किसी बैंक की जरूरत नहीं है।

इससे हानि क्या हो सकती है

- तो अभी तक हमने आपको क्रिपटो करेंसी के बारे में बताया और उसके फायदे के बारे में भी। लेकिन जैसे हर सिक्के के दो पहलु होते हैं वैसी ही क्रिपटो करेंसी के अच्छे होने के साथ कई नुकसान भी हैं।

क्रिपटो करेंसी का सबसे बड़ा नुकसान तो यही है कि इस पर किसी अथॉरिटी का नियंत्रण नहीं है। यानि कि इसकी कीमतों को कोई रोक नहीं कर सकता। इसीलिए इसकी कीमते अप्रत्याशित रूप से घटती-बढ़ती है।

क्रिपटो करेंसी में एक बार ट्रांजेक्शन पूर्ण हो जाने पर उसे रिवर्स कर पाना असंभव होता है क्यूंकि इसमें वैसे कोई ऑप्शन ही नहीं होती है।

अगर आपका वॉलेट के आईडी खो जाती है तब वो हमेशा के लिए खो जाती है क्यूंकि इसे दुबारा प्राप्त करना संभव नहीं है. ऐसे में आपके जो भी पैसे आपके वॉलेट में होते हैं वो सदा के लिए खो जाते हैं.

यह एक डिजिटल करेंसी है, इसीलिए इसे हैक किया जा सकता है। और एथरियम के साथ ऐसा हो भी चुका है।

अगर क्रिप्टो के भविष्य की बात की जाये

तोक्रिप्टोकरेंसी को इस समय भरोसे के संकट का सामना करना पड़ रहा है। सरकारें इसे शक की निगाहों से देखती हैं और इसे पारंपरिक करेंसी के लिए खतरा मानती हैं। सरकारों को ये भी लगता है कि क्रिप्टोकरेंसी एक ऐसी वर्चुअल दुनिया का हिस्सा है जो सरकारी नियंत्रण से मुक्त होने की कोशिश कर रही है और वास्तविक दुनिया के समानांतर चलने की कोशिश कर रही है। पिछले एक दो साल के अंदर इसकी लोकप्रियता बढ़ने की वजह से इसे बहुत सारे देशो में पूरी तरह लीगल कर दिया है, लेकिन फिर भी कई देशों में अभी भी क्रिप्टो बैन है।

——— रविना

NATION Live
खबरों की खबर

सवालों के घेरे में पठान

शाहरुख खान और दीपिका की फिल्म पठान 25 जनवरी को रिलीज हो चुकी है। लेकिन इस फिल्म के रिलीज होने से पहले ही यह फिल्म विवादों से घिर चुकी थी। इसकी वजह थी, फिल्म के एक गाने में दीपिका की ड्रेस, दरअसल, पठान के बेशर्म रंग गाने के एक सीन में दीपिका ने भगवा रंग की बिकिनी पहनी है। जिसे लेकर हिंदू संगठन विरोध कर रहे थे। 'पठान' फिल्म के गाने बेशर्म रंग, का खूब मजाक बनाया गया और इस गाने पर चोरी का भी आरोप लगा। लोगों का कहना था कि 2016 में रिलीज गाने की धुन जैन के मरीबा को चोरी कर बेशर्म रंग में पूरा कॉपी-पेस्ट कर दिया गया है। आपको बता दे, गाने में दीपिका पादुकोण के भगवा आउटफिट्स् को लेकर कई सवाल गए।मध्य प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने फिल्म के गाने पर एतराज जताते हुए चेतावनी भी दी थी उन्होंने कहा, अगर आपत्तिजनक आउटफिट वाले सीन न हटाए गए तो, एमपी में यह फिल्म रिलीज होगी कि नहीं इस पर विचार किया जाएगा।

साथ ही, यूपी के अयोध्या में भी 'पठान' के बेशर्म रंग गाने में भगवा का विरोध करते हुए संत समाज ने भी नाराजगी जाहिर की थी। यही नहीं, संत समाज ने शाहरुख खान पर सनातन विरोधी होने का भी आरोप लगाया था। सिर्फ संत समाज ने ही नही बल्कि, हनुमानगढ़ी के महंत राजू दास ने भी बॉलीवुड और शाहरुख खान पर लगातार सनातन धर्म का मजाक बनाने का आरोप लगाया। आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि, "बॉलीवुड और हॉलीवुड लगातार इस प्रयास में रहता है कि किस तरह से सनातन धर्म का मजाक बनाया जाए, किस तरह से हिंदू देवी देवताओं का अपमान किया जाए। पठान फिल्म में दीपिका पादुकोण द्वारा बिकिनी पहन कर साधु संतों और राष्ट्र के रंग भगवा को ठेस पहुंचाई गई। यह बेहद दुखद है। उन्होंने ये भी कहा कि, शाहरुख खान लगातार सनातन धर्म का मजाक उड़ाते रहते हैं।

उन्होंने पूछा कि क्या जरूरत थी कि फिल्म में भगवा का इस्तेमाल बिकिनी के तौर पर करके और नंगा प्रदर्शन किया जाए। उन्होंने कहा कि ये काम भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए किया गया। इन लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए, साथ ही लोगो से यह अपील भी की, वे फिल्म का बहिष्कार करें और जहां भी फिल्म लगे, उस थियेटर को फूंक दें। क्योकि जो जैसा है उसके साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिए। वैसे आपकी जानकारी के लिए बता दे, पठान' का विरोध टीजर रिलीज होने के बाद से ही हो रहा था। दरअसल टीजर में शाहरुख खान के "भारत में असहिष्णुता फैल रही है। " कहने से फिल्म का विरोध शुरू हुआ था। दीपिका पादुकोण भी इस विवाद की चपेट में आ गई। बता दे, दीपिका पादुकोण 2020 में जेएनयू गई थी और उन्होंने वहा छात्रों के साथ हुई हिंसा का विरोध किया था। वहीं अब जब दीपिका की फिल्म 'पठान' रिलीज होने वाली थी की तभी उनकी जेएनयू की तस्वीरें वायरल होने लगी और फिल्म के बायकॉट की मांग भी उठने लगी।

वहीं विश्व हिंदू परिषद की गुजरात इकाई ने रिलीज से एक दिन पहले शाहरुख खान अभिनीत फिल्म 'पठान' के खिलाफ अपना विरोध मंगलवार को वापस ले लिया और फिल्म से 'आपत्तिजनक' सीन को हटाने पर संतोष जताया।गुजरात वीएचपी के सचिव अशोक रावल ने एक बयान में कहा कि सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन ने फिल्म में 'अश्लील गीत' और 'अश्लील शब्द' को संशोधित किया है और इसलिए दक्षिणपंथी समूह अब इसकी रिलीज का विरोध नहीं करेंगे।
'बेशरम रंग' गाने में अभिनेत्री दीपिका पादुकोण को भगवा रंग की बिकिनी में दिखाने के लिए 'पठान' को आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। विश्व हिंदू परिषद सहित कई नेताओं ने फिल्म पर

प्रतिबंध लगाने की मांग की थी, जो बुधवार को रिलीज होने वाली है।पीटीआई से बात करते हुए रावल ने दावा किया कि सेंसर बोर्ड ने अपने हालिया सर्कुलर में गाने, रंग और कपड़ों को लेकर 40 से 45 सुधार किए हैं, जिससे मुद्दों का समाधान हो जाता है और इसलिए अब उन्हें विरोध करने की जरूरत नहीं है।

विहिप नेता ने एक बयान में कहा, 'पठान' के खिलाफ बजरंग दल के विरोध के बाद, सेंसर बोर्ड ने फिल्म में अश्लील गीत और भद्दे शब्दों को संशोधित किया है, जो अच्छी खबर है। मैं सभी कार्यकर्ताओं और पूरे हिंदू समुदाय को बधाई देता हूं जिन्होंने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए यह सफल संघर्ष किया। पठान के रिलीज होते ही इसके पहले शो के मिले रिस्पॉन्स को देखते हुए एग्जीबिटर्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स ने एक अहम फैसला लिया था। वहीं थियेटर मालिकों के मुताबिक पठान बॉक्स ऑफिस का राज करने वाला था, इसलिए पूरे भारत में फिल्म के 300 से ज्यादा शो बढ़ा दिए गए।

पठान...पठान...पठान! हर ओर बस यही शब्द गूंज रहा था। हर कोई शाहरुख खान की इस फिल्म का दीवाना हुआ जा रहा था। क्रेज ऐसा कि लोग थियेटर में ही झूमते-नाचते दिखाई दे रहे थे। हो भी क्यों ना... आखिर लोगों का इंतजार जो खत्म हुआ था। शाहरुख खान की फिल्म पठान नें आते ही बॉक्स ऑफिस पर तूफान ला दिया था। फिल्म को देखने का क्रेज लोगों में इस कदर था कि हर जगह बस पठान के ही पोस्टर्स, बैनर, छाए हुए थे। फैंस शाहरुख की टीशर्ट पहने घूम रहे थे। थियेटर्स के बाहर लंबी लाइनें थीं। पहले शो के मिले रिस्पॉन्स को देखते हुए एग्जीबिटर्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स ने एक अहम फैसला लिया था। थियेटर मालिकों के मुताबिक पठान बॉक्स ऑफिस का किंग साबित होने वाला था, इसलिए पूरे भारत में फिल्म के 300 से ज्यादा शो बढ़ा दिए गए थे।

पठान के लिए थियेटर मालिकों-एग्जीबिटर्स का लिया था ये फैसला अपने आप में एतिहासिक था। ऐसा शायद ही कभी किसी फिल्म के लिए किया गया हो। पठान हिंदी सिनेमा में इतने बड़े पैमाने पर रिलीज होने वाली सबसे बड़ी फिल्म बन गई थी। पठान की स्क्रीनिंग अब दुनिया भर में 8000 स्क्रीन्स पर की जाने वाली है। हिंदी, तमिल और तेलुगू भाषा में रिलीज पठान के स्क्रीन की कुल संख्या 8000 है, जिसमें डोमेस्टिक यानी भारत में 5,500 स्क्रीन, ओवरसीज स्क्रीन काउंट 2,500 है। ऐसा भारतीय सिनेमा के इतिहास पहली बार ही देखा जा रहा है कि किसी फिल्म के रिलीज के साथ ही उसके स्क्रीन काउंट को इस कदर बढ़ा दिया जाए। पठान को मिलता रिस्पॉस है ही शानदार कि ऐसे फैसले होना किसी अचंभे से कम नहीं है। शाहरुख के लिए लोगों की दीवानगी और भी बढ़ गई जब उन्होंने चार साल बाद पर्दे पर वापसी का ऐलान किया।फिल्म को लेकर कई संगठनों ने कॉन्ट्रोवर्सी क्रिएट करने की कोशिश की थी लेकिन इसके बावजूद पठान फिल्म को जनता से काफी अच्छे रिव्यू मिलते दिखे। पठान आदित्य चोपड़ा के महत्वाकांक्षी स्पाय यूनिवर्स का एक हिस्सा है। वहीं इस फिल्म में देश के सबसे बड़े सुपरस्टार शाहरुख खान के साथ दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम हैं। फिल्म को सिद्धार्थ आनंद ने किया है।

——— प्रियंका सिंह

PATHAAN

कौन है धीरेन्द्र धीरू !

आस्था है, भरोसा है, साथ ही चमत्कार के दावे हैं। कोई ईश्वर का अवतार मानता है, तो किसी की नजरों में दीन दुखियों का दुख दूर करने वाला। किसी के लिए दिव्य दरबार है। तो किसी के लिए पूरा संसार। चमत्कार पर सवाल भी उठे, दावों को खारिज भी किया। सैकड़ों लोगों की बाबा में आस्था हिली तो वहीं कुछ लोगों में उनके लिए आस्था और बढ़ गई । लेकिन अब ये समझना जरूरी है कि ये बाबा हैं कौन, इनका संसार कैसा है, ये आये कहां से है ?

महाराज पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री को समझने के लिए चलना होगा मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में बने बागेश्वर धाम में जहां दावा किया जाता है कि इस बागेश्वर धाम में आने वालों का हर कष्ट दूर हो जाता है। यहां आने वालों से कोई एंट्री फीस नहीं ली जाती। लोगों के बताए बिना ही उनके बारे में सारी जानकारी हासिल कर लेने का दावा करने वाले पंडित धीरेंद्र शास्त्री के पास क्या वाकई में कोई करिश्माई शक्ति है, ये रहस्य है। ये आस्था और अंधविश्वास के बीच की वो महीन डोर है जिसे समझ पाना मुश्किल है। छतरपुर जिला मुख्यालय से करीब 30 किलोमीटर दूर छतरपुर-खजुराहो हाईवे से सटा गढ़ा गांव बागेश्वर धाम पर देश की नजरें गढ़ी हैं। यहीं पर दर्जनों कैमरों के बीच महज 26 साल के धीरेंद्र शास्त्री का दरबार सजा रहता है। जहां अर्जी लगाने वालों का मन पढ़ने लेने का दावा करते हैं बागेश्वर धाम के महाराज धीरेंद्र शास्त्री।

बाबा बागेश्वर के दरबार में हर उम्र के लोग अपनी परेशानियां लेकर आते हैं। कोई बाबा के धाम में नौकरी की समस्या लेकर आता है तो कोई पुत्ररत्न की प्राप्ति की कामना लेकर पहुंचता है। किसी को भूत बला को दूर करना है तो कोई गृह क्लेश से छुटकारा चाहता है। सनातन धर्म की रक्षा के लिए खड़े रहने का दावा करने वाले बागेश्वर धाम के महाराज की लोकप्रियता इतनी बढ़ गई है कि अब वह अपने बयानों को लेकर भी आये दिन सुर्खियों में बने रहते हैं। इसके अलावा बाबा सोशल मीडिया पर भी काफी प्रसिद्ध हैं, इनके छोटे-छोटे वीडियो खूब वायरल होते हैं। इसकी एक वजह बुंदेली भाषा में अपनी कथाएं सुनाना भी है, जो उन्हें बाकी बाबाओं से अलग बनाता है।

वैसे आपको ये जान कर हैरानी होगी कि दो साल पहले सोशल मीडिया से शुरू हुआ उनकी प्रसिद्धि का सफर 7 समंदर पार तक पहुंच गया था। इस प्रसिद्धि के कारण ही बाबा को 14 जून 2022 को लंदन बुलाकर संसद में भरी सभा के बीच सम्मानित किया गया था। वैसे तो हमारे देश में और भी बाबा और संत है लेकिन धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री चर्चा में इस कारण है कि उनके 'दिव्य दरबार' में अर्जी लगाने वालों की भीड़ लगती है।

—————— धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री

एमपी के छतरपुर जिला में बसा है गढ़ा गांव जिसके आखिरी छोर पर मौजूद है बागेश्वर धाम मंदिर। ये वहीं मंदिर है जहां बाबा का दरबार सजता है। बताया जाता है कि ये मंदिर करीब 300 से 400 साल पुराना है, जो धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के परिवार के कुल देवता भी हैं। इसी प्राचीन मंदिर में कुछ साल पहले हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की गई है। धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री इसे बालाजी पुकारते हैं। उनसे मुलाकात के लिए यहीं पर नारियल बांधकर अर्जी लगाई जाती है। कथावाचक धीरेंद्र शास्त्री अपने शुरुआती दिनों में सत्यनारायण कथा कहते थे। धीरे-धीरे वो दरबार लगाने लगे और फिर तो इतनी तेजी से नाम हुआ कि साल के अंदर उनका जिक्र लंदन की संसद तक में हो गया। अगर यूँ कहें की बागेश्वर धाम के ये महाराज सबसे तेजी से उभरने वाले कथावाचक हैं तो गलत नहीं होगा।

धीरेंद्र शास्त्री के भागवत कथा आयोजन में आस-पास के लोग बड़ी तादाद में जुटा करते थे। और यहीं से शुरू हुआ था धीरू पंडित के धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री बनने का सफर। उनके इस दिव्य दरबार का प्रसारण अब सोशल मीडिया के हर प्लेटफार्म पर होने लगा। इससे उनके दरबार में आने वालों की भीड़ अब कई गुना हो गई। धीरे धीरे धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री का बागेश्वर धाम इतना मशहूर हो गया है कि, दुनिया से लोग अपनी पीड़ा लेकर पहुंचने लगे है। बागेश्वर बाबा हमेशा अपने साथ एक छोटी गदा लेकर चलते हैं। उनका मानना है कि इससे उन्हें हनुमान जी की शक्तियां मिलती हैं। वो हनुमान जी की आराधना करने के लिए लोगों को प्रेरित करते हैं।

लेकिन सवाल ये है की क्या धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री क्या इतने मशहूर अचानक से हुए। वो कहां से आये है उनका परिवार कौन था। उनका क्या चलन था। क्या इनका परिवार भी कथावाचक था। आखिर क्या है राज जो धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री इतनी कम उम्र में एक कथावाचक बन गए।

ये सभी सवालों के जवाब जाने के लिए हमरे अगले मासिक पत्रिका का इंतजार करें........

—————— **प्रियंका सिंह**

Delhi Events

World Book Fair

25 Feb–5 Mar
Pragati Maidan, New Delhi

Other Events
(in Delhi)

India Art Fair
Thu, 9 Feb – Sun, 12 Feb, 8:30 Pm-3:30 Pm
NSIC Exhibition Ground
NSIC Estate, Okhla Phase III, Okhla Industrial Estate, New Delhi

India Gaming Show
Thu, 16 Feb – Sat, 18 Feb
Pragati Maidan
New Delhi

YOURWAYS YOUTH FESTIVAL
Fri, 10 Feb – Sun, 12 Feb
New Delhi

City Gas Distribution in India
Tue, 14–Wed, 15 Feb
Le Meridien, Windsor Pl,
Connaught Place, New Delhi

DISTANCE EDUCATION

edutantra®
EDUCATION KA NAYA MANTRA

Distance Learning & Online Education

Key Features

Learning Management System
Impactful Video Classes
Wide Range Of Programs
Easy Admission Process
Distance Learning
Course Materials
Friendly Interface
Expert Teachers

NOW OPEN FOR REGISTRATION

Academic Collaboration with Top leading Universities

Subharti University
Suresh Gyan Vihar University
Lovely Proffessional University
NMIMS University

We change the way of Learning !

- *Talented & Experienced Educators.*
- *Doubt Sessions for your queries.*
- *Live Interaction With our Educators.*
- *Powerful video Lecture and Course Material.*
- *Distance Learning Solutions for Tomorrow.*
- *Join the Plus Community In LMS to Uplift your Carrier.*
- *Learning Management System (LMS) Platform to learn new skills.*

Have Question ?
Get in touch!

+91 704-235-0324
info@edutantra.in

NATION
Live
खबरों की खबर
NATIONAL PRECEPTOR VIVA AWARD 2022
NATIONAL PRECEPTOR VIVA AWARD 2022
NATIONAL PRECEPTOR VIVA AWARD 2022
Jhelam Express
NATIONAL NEWSPAPER
जनता बता देंगी की आतंकवादी हूँ या बेटा?
बदलते कर्तव्य पथ की तस्वीर
किंग्सवे से राजपथ, राजपथ से कर्तव्य पथ
पूरा इतिहास रमन दीक्षित के साथ
Education Mitra
LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY
ONLINE & DISTANCE LEARNING
UNIVERSITY REVIEW
UTTAR PRADESH NEET PG COUNSELLING 2022
कैसे करें रजिस्ट्रेशन?
2nd Annual Meet 2022
2nd Annual Meet 2022
M.B.A IN HEALTHCARE MANAGEMENT
KNOW YOUR SCHOOL
C.R. OASIS Convent
Sr. Sec. SCHOOL
Paprawat, Najafgarh, New Delhi
NARSEE MONJEE INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
ONLINE & DISTANCE LEARNING
UNIVERSITY REVIEW
Know Your SCHOOL
N.K. BAGRODIA PUBLIC SCHOOL
Sector - 9, Rohini, Delhi
NONSTOP आज की बड़ी खबरें EXCLUSIVE
KNOW YOUR SCHOOL
GYAN SAGAR CONVENT SCHOOL
Rajokri, Delhi
NONSTOP आज की बड़ी खबरें EXCLUSIVE
KNOW YOUR SCHOOL
M.L. KHANNA DAV Public School
Dwarka Sec-6, Delhi
NONSTOP आज की बड़ी खबरें EXCLUSIVE
CENTRE FOR EDUCATION ADDER
NATIONAL Preceptor Viva Award 2022
KNOW YOUR SCHOOL
K.R.D PUBLIC SCHOOL
Vikas Nagar, Delhi
DEFENDER डिफेन्डर
LET US SAVE THE SINKING SHIP- THE DISTANCE EDUCATION
राजनीति का तीस मार खां शिवराज
लालू के लालटेन की रौशनी में, नितीश का तीर चल गया
DEFENDER डिफेन्डर
नए साल के रंग
आज का भारत हर रविवार हकीकत से रुबरु
KNOW YOUR SCHOOL
THE MANN SCHOOL
Holambi Khurd, Delhi
क्या फिर से मोदी? चाँदनी चौक
चांदनी चौक से निकला गुजराती बोला मोदी की टक्कर में कोई नहीं

SUBSCIPTION REQUEST

DEFENDER
डिफेन्डर
पहल भारत निर्माण की

Option	Period	Issues	Tick (✓) One	You Pay
1.	1 Year	12 Issues		Rs. 350/-
2.	2 Year	36 Issues		Rs. 900/-
3.	3 Year	60 Issues		Rs. 1500/-

Yes, I would like to subscribe **DEFENDER**

Name : Mr./Mrs.

Address :

Pin

Ph : (O) (R) E-mail :

Plaese find enclosed DD/Pay Order/Cheque No. Drawn on bank

Dated For Rs. Favour of **Jan Media Pub. Pvt. Ltd.** payable at Delhi

Date

Signature

Please mail this form (or photocopy) with your rementance to:

DEFENDER

मुख्य कार्यालय : 29/2, विजय एन्कलेव, डाबरी पालम रोड़, नई दिल्ली-110045

TEL: +91 9971999976 E-MAIL : janmedia.in@gmail.com WEBSITE : janmedia.in

FACEBOOK : www.facebook.com / Nation Live TWITTER : @nationlive

YOUTUBE : www.youtube.com / Nation Live IPTV INSTAGRAM : @nation_live_

Dr.AXICO
Way To Wellness

Cough, Cold or Something More

WE BRING THE DOCTOR TO YOU.

Self Assessments

- Liver Savior
- Women Care
- Male Rejuvenator
- Obesity Pacifire
- Diabetes Manager
- Natural Kidney Care
- Detox Management
- Ortho Fortify
- Acidity Uprooter
- Thyro guard
- Fibroid

- ✔ Result Oriented Strategies
- ✔ Modern Technology
- ✔ Diet & Lifestyle Planners
- ✔ 24x7 Online Doctors Availability
- ✔ Our Certified Medicinal Kits

BOOK YOUR CONSULTANT NOW !

Website : www.draxico.com
Mail : customer@draxico.com

+91 931 082 8505

DEFENDER
डिफेन्डर
पहल भारत निर्माण की
Add : 29/2, Vijay Enclave, Dabri Palam Road, New Delhi-110045
www.janmedia.in
janmedia.in@gamil.com